जंगल रों पहचान

डॉ. मनाज़िर आशिक़ हरगानवी

जंगल रों पहचान

जंगल रों पहचान

उर्दू बाल-उपन्यास केरों अंगिका रूपान्तर

डॉ. मनाज़िर आशिक़ हरगानवी

अंगिका अनुवाद

डॉ. अमरेन्द्र

प्रकाशक

निराली दुनिया पब्लिकेशन्स

३५८-ए, बाजार देहली गेट, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२

फोन : ०११-२३२७६०६४, मोबाईल : ९८११२७०३८७

पुस्तक : जंगल रौं पहचान
लेखक : डॉ. मनाज़िर आशिक़ हरगानवी
अंगिका अनुवाद : डॉ. अमरेन्द्र
संस्करण : ई. २००६
मूल्य : ५० रुपये
मुद्रक : एम. आर. प्रिंटर्स, नयी दिल्ली-२

पुस्तक मिलने के अन्य पते

■ कोहसार, भीखनपुर-३, भागलपुर-८१२००१ (बिहार)
■ कामायनी, लाल खां दरगाह लेन, सराय, भागलपुर-८१२००१ (बिहार)

FAISAL KERO JASUSI By Dr. Manazir Ashiq Harganvi
ANGIKA TRANSLATION By Dr. Amrendra

प्राध्यापक, साहित्यकार
मित्र
डॉ. कय्यूम अंसारी
कें ई बाल उपन्यास समर्पित ।

—अमरेन्द्र

ई उपन्यास के बारे में

तोरा सिनी जानवे करै छौ कि जंगल की छेकै ।

जंगल रों लकड़ी, पत्ता, फल आरो फूलों सें तोरा सिनी परिचिते छौ । जंगल रों जानवर आरो पक्षियो सिनी सें तोहें अनभिज्ञ नै छौ । यहू पता होतौं कि फूलन देवी हेनों डाकू जंगले में रहै छेलै आरो बहुत बड़ों स्मगलर वीरप्पन के बारोहो में जानत्हैं होभौ कि वहू जंगले में रहै छेलै ।

तोरा सिनी के आपनों जासूस फैसल रों वास्ता अबकी दाफी जंगल रों एक स्मगलरे सें छै, जे स्मगलर सरकारी सम्पत्ति कें लूटै छै आरो बड़ी चालाकी सें ओकरों बेचियो आवै छै । ऊ खतरनाको कम नै छै । केकरो जान लै लेवों ओकरा वास्तें आसान बात छेकै । धन्वा-मन्वा जंगल रों स्मगलर के ऊ सरदार तांय फैसल रों पहुँच केना होलै आरो वैं ओकरा गिरफ्तार केना करलकै—ऊ सब ई उपन्यास में पढ़ों आरो दंग रही जा । ब्रेशा, दानिश आरो इन्सपेक्टर यहू उपन्यास में आपनों मौजूदगी के एहसास करैतें रहथौं । इन्सपेक्टरें चीता के शिकार के जे आपबीती सुनैलें छै, वहू कम दिलचस्प नै छै । मजा ला, सबक भी ला आरो आपनों राय्यो लिखों । तोरों राय के इन्तजार रहतै ।

—मनाज़िर आशिक़ हरगानवी

सम्पर्क : सम्पादक कोहसार
बरहपुरा, भागलपुर 812001 (बिहार)
फोन : ०६४१, २४२३६३३
मो. नं. : 9430966156

अनुवादक रों बात

'फैसल रों जासूसी' के बाद 'शिकार आरो शिकारी' आरो आबें 'जंगल रों पहचान' । 'शिकार आरो शिकारी' तें बच्चा सिनी लें खूब मनोरंजक रहवे करलै, मतरकि 'फैसल रों जासूसी' आरो कहीं लोकप्रिय रहलै ।

अंगिका में पढ़ै-लिखै वाला बच्चै सिनी की, जुअनकौ आरो बूढ़ौ चाव लैलै कें दोहरैलकै, तिहरैलकै । वहीं सें प्रभावित होय कें हम्में उर्दू के मशहूर लेखक डॉ. हरगानवी के एक आरो लोकप्रिय बाल जासूसी उपन्यास 'जंगल रों पहचान' कें अंगिका में प्रस्तुत करी रहलों छियै। जे फैसल रों जासूसी के अगला कारनामा छेकै ।

जों ई कारनामा बालपाठक सिनी कें रुचलै, तें फेनू तेसरों कारनामा ऐतै—आरो दिलचस्प, आरो रोमांचित करै वाला कारनामा । मतरकि पहिलें ई बतैय्यौ कि फैसल रों ई कारनामा कैन्हों लागलौं । तभिये कुछु आरो आगू।

—डॉ. अमरेन्द्र

3 सितम्बर 2009

सम्पादक : वैखरी
लाल खां दरगाह लेन, सराय,
भागलपुर—812002 (बिहार)
दूरभाष—0641, 2620067,
मोबाइल—9939451323

जंगल रों पहचान

संझ की बेरा । तखनी पाँच बजै छेलै । नामी जासूस फैसल घरों सें निकलै के तैयारी करी चुकलों छेलै, तखनिये फोन रों घंटी बजी उठलै । वैं उपेक्षा सें फोनों दिश देखलकै । फेनू आगू बढ़ी कें रिसीवर उठाय लेलकै आरो बोललै, ''हैलो ।''

हम्में दानिश बोलै छियौं ।''

''हों, बोलों की बात छेकै ?''

''हम्में एक ठो लहाश के बारे में खबर दै लें चाही रहलों छियौं ।'' हुन्नें सें आवाज ऐलै ।

''लहास ।'' फैसल रों आवाज बदली गेलै ।

''जी हों, धन्वा मन्वा वाला जंगल रों रास्ता के सड़कों पर पड़लों होलों छै ।''

''तोरा केना पता चललौं ? ''

''हम्में जानै छियै कि तोहें डाँटभौ आरो कहभौ कि जबें शिकार खेलवों मना छै, तबें हम्में कैन्हें गेलियै । मजकि की करतियै, हम्में बेहद बोर होय रहलों छेलियै, यही लें शिकार के गरज सें हुन्नें

निकली पड़लियै । आरो जबें लौटी रहलों छेलियै, हमरों नजर सड़क के किनारी पड़लों होलों एकटा बोरा पर ठहरी गेलै । हम्में गाड़ी रुकवाय कें देखलियै । देखलियै तें चौकी गेलियै । बोरा में एक ठो लहास छेलै ।'' दानिशें एक्के साँस में ई सब बोली गेलै । ''तोहें असकल्ले छेलौं ?''

''जी नैं, हमरों साथ अप्पू छै ।''

''अप्पू के ?''

''वहें, डाक्टर आशीष सिन्हा रों लड़का ।''

''अच्छा, अच्छा; गाड़ी केकरों छेकै ?''

''डाक्टर सिन्है साहबे केरों छेकै ।''

''तोहें बोली रहलों छों कहाँ सें ?''

''अंगिका पेट्रोल पम्प सें बात करी रहलों छी । की तोहें आवी रहलों छौ ?''

''हों, हम्में आवी रहलों छियौं । की तोहें लहाश कें आँखी सें देखलौ ?''

''जी नै, लहास तें बोरा में कोचलों होलों छै । हम्में बोरा सें लहाश नै निकाललें छियै ।''

''तोहें पेट्रोले पम्प लुग रहों, हम्में आवी रहलों छियौं ।'' ई कही फैसल नें फोन राखी देलकै आरो एक मिनट लेली कुछ सोचतें रहलै, आरो फेनू इन्सपेक्टर अंजनी शर्मा कें फोन लगैलकै । हुन्नें से 'हैलों' के आवाज ऐलै तें फैसल बोललै, ''हम्में फैसल बोलै छियै ।''

''हों सर, बोलियै, की बात छेकै ? इ वक्ती ? कोय खास प्रोग्राम छै की ?'' ''बहुत्ते खास ।'' फैसल टेलीफोन पर मुस्कैलै आरो फेनू बोललै, ''एक ठो लहास रों आवभगत करना छै । तहूँ चलों । अंगिका पेट्रोल पम्प रों नगीच पहुँचना छै । हम्में वांही लें निकली रहलों छीं ।''

''मतरकि है लहास......?'' इन्सपेक्टर रों फेनू पूछलें छेलै ।

''लहास के बारे में जानकारी तें घटना तक पहुँचला रों बादे

मालूम हुऐं पारें । तोहें जल्दी-सें-जल्दी वै ठां पहुँचों ।''

हौ दिन ब्रेशा आपनों एक सहेली कन गेलों होलों छेलै, यही लें फैसल अकेल्ले धन्वा-मन्वा जंगल दिश रवाना होय गेलै ।

जखनी फैसल अंगिका पेट्रोल पम्प नगीच पहुँचलै, तखनी तांय इन्सपेक्टर शर्मों वै ठां हाजिर होय चुकलों छेलै । फेनू की छेलै दानिश रों अगुवाई में सब आगू दिश बढ़ी गेलै । इन्सपेक्टरें जानकारी देलकै कि पुलिस फोटोग्राफरो पीछू-पीछू आवी रहलों छै ।

लहास के नगीच पहुँची कें फैसल नें हिन्नें-हुन्नें देखलकै । दूर तांय आबादी रों कोय नामो-निशान तक नै छेलै । रास्ता एकदम सून-सपाट छेलै । वै ठां सें करीब-करीब दो मील आगू सें जंगल रों सिलसिला शुरु होय गेलों छेलै । रेलवे लाइन नगीचे सें गुजरलों छेलै, जै पर एक रेलगाड़ी धड़धड़ैलें होलें गुजरवों करी रहलों छेलै ।

''एक बात समझै में नै ऐलै कि है लहास यहाँ केना ऐलै ।'' इन्सपेक्टर चुप्पी तोंड़तें बड़बड़ैलै ।

''अभी बहुत्ते बात समझै में नै ऐतौं । ई लहास केकरों छेकै ? अभी तें हम्में लहास के बोरा खोलियो कें नै देखलें छियै कि है लहास कोय मरद के छेकै आकि जनानी रों, जवान रों छेकै कि बच्चा रों, आकि बूढ़ा रों छेकै ।'' फैसल बोललै ।

''हौ ई बात तें छै, पहिलें लहास कें तें देखी लौं ।''

''ठीक छै, तें तोहें बोरा सें लहास कें निकालों ।''

फैसल रों कहना भर छेलै कि इन्सपेक्टरें बोरा कें नीचें सें पकड़ी कें उलटी देलकै ।

आबे लहास सामना में छेलै आरो लहासो केहनों—बिना सिर के । देखत्हैं सब चौकी पड़लै । बिना सिरवाला ऊ लहास कोय मरद रों छेलै । हाथ सुनहला रंग रों छेलै आरो नाखुन चौड़ा-चौड़ा । हाथों के नस सिनी उभरलों होलों छेलै । अंगुली सिनी रों पोर घिसलों होलों छेलै । गोड़ो के हालत ओकरा सें बढ़िया नै छेलै । हाथ आरो गोड़ के अंगुली सिनी रों ऊपर कुछ गुल्ठी-गुल्ठी छेलै । देहों पर जे लिबास छेलै,

वहू दामी नै छेलै ।

फैसल नें लहास कें जाँचला-परखला रों बाद कहलकै, ''ई लहास कोनो मजूर के मालूम होय छै । एकरों कलाई देखी रहलों छौ नी, कत्तें मजबूत आरो चौड़ा छै । हेनों बुझावै छै कि है लहास खुदाई करै वाला कोय आदमी रों छेकै, आकि ई आदमी भारी बोझों ढोय के काम करे छेलै ।

''मतरकि एकरों मूड़ी कथी लें काटलों गेलै ?'' दानिशें पूछलकै ।

''ताकि लहास रों पहचान ने हुएँ पारें । एकरों पहचाने खतम करै के उद्‌देश्य सें एकरों मूड़ी काटी लेलों गेलों छै ।

''आरो लहास यहाँ लानी कें फेकी देलों गेलों छै ।'' इन्सपेक्टर बात कें पूरा करतें बोललै ।

कि तखनिये फोटोग्राफर वैठां पहुँची गेलै ।

''इन्सपेक्टर साहब, लहास रों पोस्टमार्टम जल्दिये करवाय लें आरो शहर के आस-पास रों सब्भे थाना सिनी सें ई बात के खोज-खबर लौ कि कोय्यो केकरो गुमसुदगी के रिपोर्ट तें दर्ज नै करवैलें छै ।'' फैसल हिदायत दिएँ लागलों छेलै, एक क्षण रूकी कें फेनू कहलकै

''आबें हम्में जैभों ।''

''आरो हमरा लें की हुकुम छै ।''दानिशें पूछलकै ।

''अभी तें मामला उलझलों होलों छै । पोस्टमार्टम रिपोर्ट आकि थाना सें गुमशुदगी रों रिपोर्ट मिलला रों बादे कोय कदम उठैलों जावें सकै छै । अभी तें हम्में एकदम सें अन्हारों में छीं ।''

''तोहें ई वक्ती कहाँ जाय रहलों छों ?''

''घोंर लौटी जैवै ।''

''आरो अप्पू जी तोरों की हाल छै ? तारों माय-बाबू तें छीक छौं नी ? हुनका सिनी कें हमरों नमस्कार कहियौ आरो तोहें यहू शिक्षा ला कि आइन्दा सें शिकार पर नै ऐवौ । पकड़लों जैवा तें कानून सजाय देतौं । टीवी आरो अखबारों में फिल्मी हीरो सलमान खान रों

परेशानी देखिये,पढ़िये रहलों होभौ ।''

''जी आइन्दा सें कभियो नै ऐवै । मतरकि एक बात हम्में कहे लें चाहे छियै, शायद आपनें रों काम के हुएँ ।''

''हों, हों बोलों ।''

''हौ ई बात छेकै कि जखनी हम्में शिकार खेलै लें अन्दर गेलों छेलियै, तखनी ऊ सब आदमी सड़क रों किनारी, झाड़ी में कुच्छू खोजी रहलों छेलै ।''

''मतरकि हम्में तें कुछुवे नै देखलें छेलियै ।'' दानिश चकरैतें बोललै ।

''तखनी हम्में एक ठो कबूतर रों पीछा करी रहलों छेलियै, जे ठारी-ठारी उड़ी रहलों छेलै ।''

''ओहो, तोहें ऊ सब आदमी कें कहाँ पर देखलौ, आरो ऊ सब केन्हों आदमी छेलै ?''

''हम्में जंगल रों बहुत्ते भीतर नै गेलों छेलियै । किनारिये सें कुछ भीतर शिकार खोली-खाली लोटी रहलों छेलियै । तखनिये दू आदमी हमरा नजर ऐलों छेलै । यही सड़कों के सीध में—हौ जे कच्चा रास्ता भीतर गेलों होलों छै । हों एतना कहें पारौं कि ऊ दोनों देखै में भला आदमी नै लागी रहलों छेलै ''की तोहें ऊ दोनों कें गौर सें देखलें छेलौ ?''

''नै, बस हेन्हैं कें दोनों पर नजर पड़ी गेलों छेलै । ऊ दोनों वहाँ ठहरलों नै छेलै । कुछ देखतें-सुनतें किनारी-किनारी बागू बढ़ी गेलों छेलै ।''

''की तोहें ऊ जग्घों दिखावें पारों ?''

''कैन्हें नी । चलों ।''

फैसल नें दानिश दिश देखलें छेलै । फेनू फैसल, दानिश आरो अप्पू तीनों गाड़ी में बैठी गेलों छेलै । तें इन्सपेक्टर शर्मा नगीच आवी कें फैसल सें बोललै, ''हम्में लहास उठवाय कें ये ठां सें लौटी जैवै ।''

''ठीक छै । हम्में जरा आगू तांय जाय छियौं । पन्द्रह-बीस

मिनटों में लौटी ऐलियौं, तबें तें साथें चलवौं आरो जों देर होय जाय छै, तें तोहें इन्तजार नै करियों ।'' एतना कही फैसल ने गाड़ी इस्टार्ट करी देलकै ।

''हिन्नें ट्रैफिक बहुत्ते कम रहै छै ।'' अप्पू बोललै

''हौ रास्तो सुनसान छै, फेनू ई आम राजमार्ग भी तें नै छेकै । ई रास्ता सें मोटरगाड़ी खाली चतरा लेली जाय छै, वहू में एक्के बजे दिन तांय । फेनू ई इलाका नेक्सलाइट एरियो छेकै । ई जंगल में डाकुओ रहै छै—हमरा ई सब मालूम छै, यही कारण छेकै कि ट्रैफिक नै के बराबर चलै छै । होना कें कै एक ठो रेलगाड़ी जरूरै जंगलों के बीचों सें निकले छै ।

''ई जंगल बहुत खतरनाक बुझावै छै ।'' दानिशें जंगल दिश देखतें कहलकै ।

''एतनै नै, यैमें खतरनाक जंगली जानवरो कम नै छै ।'' फैसल ने बतैलकै ।

''बस गाड़ी कें यही ठां रोकी दौ, यही ऊ जग्घों छेकै ।'' अप्पू ने गाड़ी रोकै के इशारा करतें कहलकै ।

गाड़ी रूकी गेलों छेलै आरो सब के सब गाड़ी सें नीचें उतरी गेलै । अप्पू फेनू अंगुली सें इशारा करतें कहलें छेलै, ''यही हम्में हौ दोनों आदमी कें देखलें छेलियै । यही रास्ता सें ऊ दोनों आगू बढ़ी गेलों छेलै ।''

जखनी फैसल, दानिश आरो अप्पू ई जग्घों लें चललों छेलै, तखनिये दिन ढलै पर होय चललों छेलै, आबें तें साँझो उतरै पर छेलै ।

''आबें अन्धेरा होय चललों छै । ई वक्ती आबें आरो आगू जैवों ठीक ने होतै । जों मौका मिललै तें कोय्यो दिन आकि कल्हे आवी जैवै, मजकि इखनी चली चलों ।'' वापसी वक्ती इन्सपेक्टर पम्प रों पास नै दिखलै, ऊ लहास उठाय कें जाय चुकलों छेलै ।

गाड़ी अंगिका पेट्रोल पम्प के नगीच रोकी कें फैसल नें दानिश

आरो अप्पू कें उतारलकै, जहाँ पर अप्पू रों कार खाड़ों छेलै ।

फैसल आगू बढ़े के भाव में ऐलै, तें अप्पू नें गाड़ी के डिक्की खोलतें कहलकै, "कै एक ठो हारिल आरो तीतर हाथ लागलों छै, दू-चार तहूं लै लें नी ।"

"जों ज्यादा छौं तें दै दा । शिकार के तें हम्मूओं शौकिन रहलों छियै । जंगली चिड़िया आरो जंगली जानवर रों मजा कुछ आरुवे होय छै । वहू में हारिल के की कहवों । चिड़िया में सबसे स्वादिष्ट माँस हमरा हारिले के लागै छै । हारिल हेनों पंछी छेकै, जे जमीन पर ने उतरै छै । कहावत छै कि पानी पियै लें जबें ई उतरै छै तें गाछ के कोय छोटों रं ठाहुर आपनों पंजा में फँसैये कें उतरै छै । आरो वही पर पैर रखी कें पानी पीयै छै ।"

दानिश आरो अप्पू सें अलग होय कें फैसल सीधे घॉर आवी गेलै ।

पोर्टिको में गाड़ी खड़ा करी ऊ बाहर ऐलै, तें देखलकै बरान्दा पर कुर्सी पर बैठलो ब्रेशा स्वेटर बुनी रहलों छेलै ।

"ई वक्ती कहाँ सें तोहें आवी रहलों छों ?" ब्रेशा स्वेटर बुनतें-बुनतें पूछलकै ।

"एक लहासों के पासों सें ।"

"बस, शुरु होय गेलौ । तोरा पर तें दिन-रात जासूसिये सवार रहै छौं । कभियो तें ढंगों के बात करलों करों ।"

"अरे, हम्में गलत कहाँ बोली रहलों छियै । तोहें हमरों सेकरेट्री होय कें ई तरीका सें बात करभौ । जरा मर्यादो कें तें ख्याल करों ।"

"ई वक्ती हम्में डयूटी पर थोड़े छियै आरो नै आफिसे में छी ।"

"यै सें की होय छै !"

"बहुत कुछ होय छै । कभियो तें लहास, खून, चोरी-डकैती सें हटी कें बात करलों करों । अच्छा बतावों कि गेलों कहाँ छेलौ ?"

"बतैलियौं नी, कि एक ठो लहास के खबर मिललों छेलै ।"

‘‘कहाँ ?’’ ब्रेशा संभली कें बैठी रहलै ।

‘‘धन्वा-मन्वा रों जंगल रों नगीच । दानिशें लहास देखी कें खबर करलें छेलै ।’’

‘‘मजकि दानिश वहाँ की करी रहलों छेलै ?’’

‘‘डाक्टर आशीष सिन्हा रों बेटा अप्पू साथें शिकार खेलै लें गेलों छेलै । वापसी वक्ती वें जंगल रों करीब लहास देखलकै । बस वहीं सें सीधे आवी रहलों छी । पोस्टमार्टम लेली इन्सपेक्टर अंजनी शर्मा लहास कें लै गेलै ।’’

‘‘आरो लहास केकरों छेकै ?’’

‘‘यहें तें कहना मुश्किल छै । लहास के मुड़िये गायब छै । खाली धड़े मिललों छै । ओकरों पहचान के कोय तरीका नजर ने आवे छै ।’’

‘‘धन्वा-मन्वा के जंगल तें दिन-ब-दिन खतरनाके होलों जाय रहलों छै । आय हम्में फरहत यहाँ इस्लामनगर गेलों छेलियै, वहीं करीमगंज रों बेनजीर भी पहुँचलों होलों छेलै । वै धन्वा-मन्वा जंगल रों जिकिर छेड़ी छेलें छेलै ।’’

‘‘मजकि वहाँ जंगल रों जिक्र केना उठलै ?’’

‘‘तोरा शायत मालूम हुएँ, बैगन तोड़ी कें मालगाड़ी सें सामान चोरी करै के घटना आयकल यहाँ बहुत्ते होय रहलों छै ।’’

‘‘हों, कोय हमरा बतैनें छेलै, मतर हम्में वै दिश ध्यान नै छेलैं छेलियै । मतरकि मालगाड़ी सें सामान चोरी जाय के बात के संबंध जंगल सें की छै ?’’

‘‘छै, आखिर मालगाड़ी तें ध्न्वा-मन्वा के जंगल के करीबे सें गुजरै छै ।’’

‘‘अच्छा ।’’

‘‘हों, हर साल लाखो कीमत के सामान गायब होय जाय छै आरो ई सिलसिला पिछुलका पाँच-छों सालों सें जारी छै ।’’

‘‘आरो हम्में यैं सें बेखबर छियै ।’’

‘‘ई बात छै कि हम्में हत्या के केस ज्यादा देखै छियै, यही लें पुलिसौं हमरा सिनी कें खबर नै दै छै । होन्हौ कें ई मामला पुलिसे के छेके आरो हमरा सिनी सी. आई. डी में छियै ।’’

‘‘ठीक बात छै, मतरकि नुकसान तें हमरों देशे के होय रहलों छै । सोचों, कत्तें जनता परेशान रहतें होतै आरो रेलवे विभाग हर्जाना भरतें-भरतें आजिज होय गेलों होतै । पाँच-छों सालों के वक्त बहुत्ते होय छै ।’’

‘‘हों, ई बात तें छै, तबें फेनू ?’’

‘‘फेनू ई कि हम्में फिकिरमन्द होय गेलों छियै । हमरा कुछ करै लें होतै ।’’ ‘‘हमरा ई सब अइये मालूम होलों छै । फरहत के घरवालां बतैलकै । हुनका सिनी पता लगैनें छै कि करीमगंज मुहल्ला में बैगनब्रेकर रहे छै ।’’

‘‘जों सच्चे में करीमगंज मुहल्ला में बैगनब्रेकर छै तें फरहत के घरवाला के एकरों जरूरे जानकारी होतै । हमरो जान-पहचान रों वहाँ कै ठो लोग छै । चक्रधर सिंह, मिथिलेश झा, साथी सुरेश, धनञ्जय मिश्र, श्याम लाल आनन्द आरो कै एक ठो लोग वही मुहल्ला में रहै छै ।’’

‘‘हम्में फरहत आरो हुनकों घरवाला सें पूछलें छेलियै ।’’

‘‘तें हुनका सिनी की कहलकै ?’’

‘‘यही कि बैगन तोड़ैवाला कुछ लोग तें वहाँ जरूरे छै जेकरा मुहल्ला वालां आपनों भाषा में झिरकटिया कहे छै ।’’

‘‘ऊ सब रों पहचान केना होलै ?’’

‘‘ऊ सब चोरी के माल बिक्री करें छै । बड़ों पैमाना पर तें ऊ सब कहीं आरो बिक्री करै छै, मतर मुहल्ला रों लोगे सर्ट-पेंट रों कपड़ा, घड़ी, कलम, बस हेने किसिम के जरूरत भर के चीज सिनी ऊ सब सें खरीदतें रहै छै ।’’

‘‘आय तहूँ कारनामा करी दिखैलें छो ।’’ फैसल ने ब्रेशा के तारीफ में कहलकै ।

''केन्हों कारनामा ?''

''यहें, झिरकटिया के बारे में जानकारी दै कें । है कारनामा सें कोय्यो कम छै की । हम्में देखवै कि चोरी के है सिलसिला हम्में केना बन्द करावें सकै छियै ।''

''हर मामला में टाँग अड़ैवों तें तोरों आदत बनी गेलों छौं ।''

''आबें आपनों प्रकृति कें हम्में की करौं ब्रेशा, जैठां देश आरो राष्ट्र के बात आवै छै, हमरों खून में उबाल आवै लागै छै ।''

''मजकि एक बात हमरों समझ में नै ऐलै कि करीमगंज रों दू, चार, दस लुच्चा-लफंगा आदमी बैगन केना तोड़ी लै छै आरो माल के की करै छै ?'' ब्रेशा बड़बड़ैलों छेलै ।

''ई काम दू-चार लोगों के नै लगै छै । बेशक यैमें एक पूरा गिरोह काम करी रहलों होतै, आरो ई गिरोह बेहद खतरनाक मालूम होय छै । करीमगंज के जे लोग कपड़ा, घड़ी आरनी बेचै छै, ऊ तें मामूली किसिम के कार्यकर्त्ता छेकै ।''

''हूँ, तोरों ख्याल एकदम दुरुस्त बुझावै छौं ।''

''अरे, आबें तोहें स्वेटर बुनवों बन्द करों । जबें देखों, कुछ-न-कुछ बुनतै रहै छों । अँगुली कें मशीन बनाय रखलें छौ । ई सब काम बड़ी-बूढ़ी कें शोभै छै । तोरों अम्मा बोलै छौं तें अच्छा लागै छै । तोरों उम्र अभी है सब काम करै के लायक नै होलों छौं । कथी लें जानी-बुझी कें आँख के रोशनी खतम करै पर तुललों छों ।''

''वाह, तोरा कथी लें बुरा लागै छौं । ई हमरों निजी मामला छेकै ।''

''ठीक छै, जों है तोरों निजी मामला छेकौं, तें तोहें एकरा आपन्हैं तक सीमित रखों । हमरों सामना नै बुनलों करों ।''

''आबें ई जबरदस्ती नै छेकै तें की छेकै ।''

''अरे हों, हम्में तें भूलिये गेलों छेलियै । कै ठो हारिल आरो तीतर गाड़ी के डिक्की में रखलों होलों छै, दानिश आरो अप्पूं छेलैं छै । की तोरा पकावै लें आवै छौं ?''

‘‘भोलू तें छै, वही पकाय देथौं ।’’

‘‘हम्में तोरा सें पूछी रहलों छियौं आरो तोहें नौकरों पर टाली रहलों छों ।’’

‘‘हम्में पकावै के कला तें राखै छियै मजकि ई वक्ती ?’’ कुछ टारै के भाव सें ब्रेशा बोललै ।

‘‘तें कोय बात नै । ई लै जा, इखनी एकरों नली आरनी निकाली कें फ्रिज में रक्खी दौ ताकि खराब नै होय जाय । भोरे नाश्ता आरो खाना में मजा लै-लै कें खैवै ।’’

‘‘हमरों हिस्सा ?’’

‘‘बचलों-खुचलों हड्डी सब तोहें लै लियों, आरो की ।’’

ब्रेशा बड़ी खामोशी सें उठलै आरो शिकार लै कें आगू बढ़ी गेलै । ओकरों क्वार्टर बगले में छै । माय-बाबू रों साथ रहै छै ।

फैसल नें ब्रेशा सें जाय सें ने रोकलकै, कैन्हुं कि आरो दूसरों ढेरे काम निपटाना छेलै । फेनू आयकों लहासों के बारे में सोचना छेलै । बैगन तोड़ी कें माल निकालें वाला के बारहो में सोचना छेलै ।

अगला सुबह अभी नास्ता करी कें फैसल चाय के इन्तजारे करी रहलों छेलै आरो तुरत आयको अखबार देखिये रहलों छेलै कि इन्सपेक्टर साहब आवी गेलै ।

‘‘आबें ला, एकदम भोरे-भोर हिनी टपकी पड़लै ।’’ ब्रेशा इन्सपेक्टर कें देखियै बड़बड़ैलै ।

फैसल नें चौंकी कें देखलकै आरो इन्सपेक्टर अंजनी शर्मा कें देखथैं बोललै, ‘‘आवों, आवों इन्सपेक्टर साहब ।’’

‘‘लहास लै ऐला रों बाद कल शाम बड़ी हंगामा होय उठलै’’ इन्सपेक्टर बैठतें होलें बोललै, ‘‘धन्वा-मन्वा के इलाका शेरघाटी थाना में पड़ै छै । हम्में ओकरा खबर नै करलियै । जबें पता चललै तें थाना इन्चार्ज शाहिद दौड़तें होलें ऐलै आरो वैं हमरा सें शख्त आवाज में कहलकै । ऊ बोली रहलों छेलै कि ‘लहास रों जिम्मेदारी ओकरों छेलै, हम्में सी. आई. डी वाला ओकरा में कैन्हें दखलअन्दाजी करलियै ।’

एतना होला पर हम्में लहास ओकरों हवाला करी देलियै ।''

''ई तोहें गलत करलौ । कम-से-कम टेलीफोन करी कें हमरा सें पूछी तें लेतियौ । जबें हम्में दखलअन्दाजी करी चुकलों छेलियै, तें पोस्टमार्टम तांय लहास कें आपनों कब्जा में रखना छेलै आरो फेनू ओकरा सख्त आवाज में बोलै के हिम्मत केना होलै ।'' कहतें-कहतें फैसल रों चेहरा गुस्सा सें लाल होय उठलै ''हों, हमरा सें गलती होय गेलै ।'' इन्सपेक्टर नजर झुकैतें बोललै ।

''तोहें हेनों करों कि यहीं से फोन करी कें शाहिद सें पोस्टमार्टम रिपोर्ट माँगों ।''

फैसल के बोलना भर छेलै कि इन्सपेक्टरें नम्बर डायल करलकै आरो कुच्छू देर लें रिसीवर कानों सें लगैलें राखलकै आरो फेनू बोललै, ''हम्में इन्सपेक्टर शर्मा बोली रहलों छी । कल वाला लहास रों पोस्टमार्टम रिपोर्ट ऐलै ?''

''लहास तें ओकरों वारिश के हवाला करी देलों गेलै आरो अभी तांय ऊ गली कें राखो होय चुकलों होतै ।''

''की लहास के बारे में जानकारी मिली चुकलों छै ?''

''जी हों, जों मालूम नै होतियै तें ऊ वारिश के हवाला केना होतियै ।''

''लहास केकरों छेलै आरो वारिश सिनी लोग के छेकै ?''

''ई सब तोहें कैन्हें पूछी रहलों छौ ?''

''आपनों जानकारी वास्तें ।''

''मतर है जानकारी तोहें कैन्हें चाहे छौ, जबें कि छानबीन हमरा करना छै ।''

''तोहें ई तें बतावों कि हत्या के कारण मालूम होल्हौं ?''

''अभी नै, खाली एतन्हें पता चललों छै कि ऊ लकड़ी काटे लें जंगल रों दिश गेलों छेलै ।''

''ऊ छेलै के, हमरा एकरों जानकारी चाही ।''

''हम्में नै बतैभौं ।''

''जरा होल्हऑन करले राखों ।''

इन्सपेक्टर नें फोन पर हाथ रखी कें फैसल कें सब बात बतैलकै । सुनत्हैं फैसल नें इन्सपेक्टर के हाथों सें रिसीवर लेतें बोललै ।

''हेलो, हम्में फैसल बोली रहलों छी । हमरा बिना सिरवाला लहास रों जानकारी चाही ।''

''कैन्हें ?''

''ओकरों हत्या के कारण के खोजबीन लें ।''

''छानबीन हम्में करी रहलों छियै । ये में तोरों दखलअन्दाजी नै हुऍ तें अच्छा होतै ।''

''ई तोहें बोली रहलों छौ ।''

''आपनों बोली दुरुस्त करों, हम्में उमर में तोरा सें बड़ों छियौं ।''

''ठीक छै ।'' फैसल नें टेलीफोन राखी देलकै । गुस्सा सें ओकरों मुँहों सें कोय आवाज नै निकललै । ऊ पीठी पर हाथ बाँधलें कोठरी में टहलें लागलै । ब्रेशा सहमी गेलों छेलै आरो इन्सपेक्टर खामोश छेलै ।

बहुत्ते देर बाद फैसल बोललै, ।'' शाहिद के शामत आवी गेलों छै । नै मालूम, ऊ कौनी भ्रम में छै । हम्में झगड़ा नै चाहे छियै, मजकि हमरा एकरों रवैया सें दुःख पहुँचलों छै, खैर ई वक्ती इन्सपेक्टर साहब तोहें हेनों करों—शेरघाटी थाना में अबदुल्ला नाम के एक सिपाही छै, केकरौ भेजी कें ओकरा बुलवाय ला । हमरों हवाला दैय्ये कें बुलवैयौ, ऊ तुरत्ते आवी जैतै ।''

''हम्में अभिये केकरो वहाँ भेजै छियौं ।'' इन्सपेक्टर शर्मा उठतें हुएँ बोललै। इन्सपेक्टर के जैत्हैं ब्रेशा पूछलकै, शाहिदें की कहलकौं ?''

''ओकरों दिमाग बहकी गेलों छै । हमरा हौ लहास के बारे में जानकारी दै सें मुकरी गेलै । होना कें सब्भैं ई जानै छै ककि हम्में हमेशै सें पुलिसवाला कें मददे करतें ऐलों छियै ।''

''कल हमरा यहू पता चललों छेलै कि शेरघाटी थाना में

आपनों बदली लेली जमादार आकि सब इन्सपेक्टर पैरवी करतें रहै छै आरो टाका के बल्लों पर वै थाना में पहुँची जाय छै ।'' ब्रेशा बतलकै ।

''आखिर ऊ थाना में हेनों की बात छै ?''

''हम्में की जानौं ।''

''आबें अबदुल्ला आवी जाय, तब्हें हम्में कोय हरकत में आवें पारौं । हमरा कन्हौं सें कोय ओर तें मिली जाय, फेनू तें सब्भे गुन्थी सामना में आबी जैतै ।

अभी फैसल रों बात ठीक सें खतमौ ने होलों छेलै कि तखनिये मोटर साइकिल सें दानिश वहाँ आवी पहुँचलै ।

''की कोय खबर ?'' दानिशें पूछलकै, ''हम्में कॉलेज जाय रहलों छेलियै, सोचलियै,तोरा सें मिललें जाँव, की कलकों लहास के बारे में कुछ पता चललै ?''

''अभी तांय तें कुछुवो नै मजकि......'' आरो विस्तार सें सब बात फैसल ने ओकरा बताय देलकै ।

अभी जाय लें दानिश उठियै रहलों छेलै कि तखनिये इन्सपेक्टर शर्मा वहाँ आवी गेलै ।

''अबदुल्ला ऐत्हें होतै, हेना कें हम्में ई खबर आनलें छियै कि लहास हीरा माँझी नामक आदमी रों छेलै । ऊ करीमगंज में, मुहल्ला रों सबसें किनारी हरिजन के झोपड़ी में रहै छेलै ।''

''वाह, ई काम के बात होलै, मजकि है जानकारी तोरा केकरा सें मिललौं ?'' ''हमरों एक सिपाही करीमगंज मुहल्ले में रहै छै । वहीं बतैलकै । सोंसे मुहल्ला में ऊ लहास रों चर्चा छै ।''

''शाहिद बेशक बेवकूफ छै । वैं केना ई समझी लेलकै कि हमरा लहास रों बारे में विस्तार सें जानकारी नै मिलें सकतै ।'' ब्रेशा बोललै ।

''अभी ओकरा छोड़ों । ई वक्ती हमरा सब सीधे करीमगंज पहुँचवै । दानिश तोहें कॉलेज जावे सकै छों । मजकि साँझै हमरा सें मिली लियों जरुरै ।''

''हम्मू आपनें के साथ चलै छियौं ।''

''नै, पढ़ाय पर पहलें ध्यान दौ । तोरों लेली जासूसी अभी दूसरों दर्जा रों काम छेकै । पहलों काम शिक्षा कें पूरा करवों छेकै । होना कें खाली वक्तों में तोहें रहवें करै छों ।''

''ठीक छै'' कही कें दानिश कॉलेज दिश रवाना होय गेले आरो फैसल, इन्सपेक्टर, ब्रेशा, करीमगंज तरफें चली पड़लै ।

ठीक हरिजन सिनी के झोपड़ी के नगीच आवी कें इन्सपेक्टरें जीप रोकी देलकै आरो तीनों नीचें उतरी गेलै ।

जीप के रुकना छेलै आरो तीनों के उतरना छेलै कि ढेर सिनी बच्चा आरो जनानियों झोपड़ी सिनी सें झाँकें लागलै । मुहल्ला के आरो-आरो बच्चा साथें नौजवानो जीप के नगीच सिमटें लागलों छेलै ।

फैसल नें एक नौजवान सें पूछलकै, ''यहाँ पर हीरा माँझी रों झोपड़ी कोन ठो छेकै ?''

''ऊ सामना में ।'' नौजवान नें दूर एक ठो झोपड़ी दिश इशारा करलकै ।

''वहाँ आरो के-के रहै छै ?''

''ओकरो बीबी आरो ओकरा दू बच्चा ।''

नौजवान सें आरो बात नै करी कें फैसल ऊ झोपड़ी के नगीच पहुँची गेलै । एक ठो जवान जनानी आपनों उदास सूरत लेलें दरवाजा पर ठाड़ी छेलै आरो दू छोटों-छोटों बच्चो ओकरों साड़ी पकड़ने ठाड़ों छेलै ।

फैसल नें ओकरों प्रति गहरा सहानुभूति दिखलैतें कहलकै, ''हमरा हीरा के हत्या होय गेला पर खुब्बे दुःख छें । हम्में चाहै छियै कि हत्यारा जत्तें जल्दी-सें-जल्दी हुएँ सकें पकड़ाय जाय, यही लें हम्में तोरों लुग ऐलों छियौं ।''

फैसल के बात सुनी कें जनानी रों आँख छलछलाय ऐलै ।

''कानला सें दुःख दूर होय वाला नै छै । तोहें हमरा ई बतावों कि हीरा के कोय दुश्मन तें नै छेलै ?''

जनानी मूड़ी हिलाय के नै बतैलकै ।

''हीरा काम की करै छेलै ?''

''जंगल में लकड़ी काटै छेलै ।''

''ओकरों अलावो आरो कोय काम ?''

''नै ।''

''तें फेनू आखिर ओकरों गर्दन कैन्हें कटाय गेलै ? कोय-न-कोय तें कारण होवे करतै । आरो तोहें हीरा के बीबी यानी पत्नी छेकौ, यही लें तोरा जरूरे एकरों ज्ञान होतौं । जों तोहें हमरा नै बताय छौ, तें हत्यारा नै पकड़लों जैतै । आरो यहू संभव छै कि वैं तोरा आकि फेनू तोरों बच्चाहौ कें कोय नुकसान पहुँचावें ।''

जखनी फैसल जनानी सें बात करी रहलों छेलै, तखनी इन्सपेक्टर भीड़ कें वहाँ सें हटी जाय के निवेदन करी रहलों छेलै ।

हुन्नें फैसल केरों निवेदनो जारी छेलै, ''तोहें हमरा हीरा के बारे में सब कुछ बतावों । सोचवों आरो देर करवों मुनासिब नै छै । तोरों पति रों जिनगी एत्तें मामूली नै छेलै कि कोय ओकरा हमेशा लेली खतम करी दै आरो ओकरा सजैयो नै मिलें ।''

ई सुनी कें जनानी कपसतें होलें बोललै,'' हुनी जंगल रों सरदार वास्तें काम करै छेलै ।''

''जंगल रों सरदार ।'' फैसल नें अचरज सें पूछलकै ।

''हों, हमरों पति ओकरा जंगल रों सरदारे कहै छेलै । ऊ बड्डी मालदार आरो जालिम आदमी छेके । रेलगाड़ी कें लूटै छै । बड़ों-बड़ों दौलत वाला आदमी सें टाका वसूल करै छै । पुलिसो वाला ओकरा सें डरै छै ।''

''की है सब बात हीरा तोरा नैं बतैलें छेलौं ?''

''हों ।''

''वैं आरो की बतैलें छेलौं ?''

''यहू कि सरदार पुलिसवाला कें हर महिना देर सिनी टाका दै छै, यही लें पुलिस ओकरों खिलाफ कुछ नै करे छै ।''

''हीरा जंगल रों सरदार लुग केना पहुँचलै आरो वैं सरदार लेली की काम करै छेलै ?''

''हुनी एक दिन जंगल में लकड़ी काटी रहलों छेलै कि भयानक चेहरा रों एक ठो आदमी हुनकों लुग ऐलै आरो वैं मुँहों पर कारों कपड़ा लपेटी कें हुनका हेनों जग्घों लै गेलै, जेकरों बारे में हुनका कभियो पता नै चललै । वहाँ हुनका भयानक लोग सिनी नजर ऐलों छेलै । ऊ भयानक आदमी हमरों पति सें कहलकै कि आय सें ऊ जंगल रों डाकू वास्तें काम करतै आरो इन्कार करला पर आकि केकरौ बतैला पर हुनका जान सें मारी देलों जैतै ।''

''तोहें ई तें जानथै होभौ कि आखिर हीरा सें की काम लेलों जाय छेलै ।''

''हुनका जंगल रों निगरानी के काम देलों गेलों छेलै । बाहरे रही कें हुनका हे देखै लें होय छेलै कि शिकार खेलै लें के-के लोग आवै छै आरो कहीं जंगल रों भीतर तें नै जाय छै । जों कोय जंगल रों भीतर शिकार खेलै लें जाय छेलै तें हमरों पति कें एक खास अन्दाज में लगलों रस्सी कें तीन दाफी खीचै लें होय छेलै ।''

''ऊ गाछ के आगू की छेलै । हीरां हौ रस्सी रों मदद सें ऊ सब लोगों के बारे में पता लगावै रों कोशिश करलें छेलै आकि नै ?''

''हमरों पति ऊ लोग के खोजों में छेलै, शायत यहें लें मारलों गेलै । हुनी आठमां क्लास पास छेलै आरो बड़ी सूझ-बूझ राखैवाला छेलै । हुनी तें हमरौ पढ़ै लें सिखैलें छेलै । हुनिये हमरा बतैनें छेलै कि हुनका हौ गाछ रों आगू जाय कें इजाजत नै छेलै । हुनका धमकियों देलों गेलों छेलै कि हौ गाछ के आगू गेला पर हुनका मारी देलों जैतै ।''

''की हीरां तोरा ऊ गाछ रों बारे में कुच्छू बतैलें छेल्हौं कि हौ गाछ जंगल में कै ठां छै ?''

''हों, हुनी बतैलें छेलै कि जंगल सें पूरब में एक मील आगू गेला पर जंगली बेरी रों एक झुण्ड छै, वही झुण्ड रों पश्चिम दिश शीशम रों एक बहुत ऊँच्चों गाछ छै । वहीं गाछ सें एक रस्सी लटकतें

रहै छै ।''

''है बात जानकारी वास्तें तोरा बहुत्ते ध्न्यवाद....हों तें फेनू की होलै ।''

''हमरों पति बहुत्ते दिनों तांय, लगभग डेढ़ सालों तांय, शिकारी रों निगरानी के काम करतें रहलै । फेनू एक दिन, जबें हुनी रस्सी कें हिलावै लें शीशम गाछ लुग पहुँचलै, तें हे देखी कें दंग रही गेलै कि दुकानी में बिकै वाला बहुते सब बोरा, कपड़ा रों गट्ठर आरो दूसरों सब सामान रखलों होलों छेलै, जे सिनी उठाय-उठाय कें दस-बारह आदमी गाछ रों आगू लै जाय रहलों छेलै। वै सिनी लोगे जबें हमरों पति कें देखलकै, तें हुनका पकड़ी लेलकै... पहिलें तें हुनका मारलों-पीटलों गेले, मतरकि जबें हुनी वै ठां आपनों मौजूदगी रों कारण बतैलकै तें हुनकों आँखी पर कारों पट्टी बाँधी कें फेनू वहा जग्घों पर लै गेलों गेलै, जहाँ हुनी पहिलों दाफी पहुँचैलों गेलों छेलै । वहाँ हुनका बहुत्ते देर तांय रोकलों गेलै । शायत हुनकों बात के जाँच-पड़ताल लेली एक आदमी जंगल भेजलों गेलों छेलै कि भीतर कोय शिकारी पहुँचलों छेलै कि नै । जबें हमरों पति के सच्चाई साबित होय गेलै, तें हुनका है हिदायत मिललै कि आइन्दा सें जबें भी मालगाड़ी के लूट हुएँ, तें सामान ऊ गाछ सें शीशम गाछ तांय पहुँचाय देलों करै ।''

''है काम लेली हीरा कें वेतन की मिलै छेलै ?''

''पाँच हजार टाका महीना ।''

''तभियो तोरा सिनी ई झोपड़ी आरो गन्दगी में कैन्हें बसलों होलों छौ ?''

''जंगल के सरदार के यहाँ हुकुम छेलै कि हमरा सिनी यहें झोपड़ी में रहौं ताकि केकरौ कोय किसिम के शक नै हुएँ । हमरों पति रोजे-रोज जंगल सें लकड़ी लानै छेलै, जे लैकें बेच्हौ लें जाय छेलियै । हेनों जोखिम के काम करल्हौ पर आरो टाका रहल्हौ पर हमरा सिनी नै अच्छा खावें सकै छेलां आरो ने पहनै सकै छेलां । हमरों पति कें

एक दाफी नगरपालिका में सरकारी नौकरियो मिली रहलों छेलै, मतर हुनी नै जावें सकलै । सरदारें मना करी छेलैं छेलै ।''

''मतरकि हीरा कें कैन्हें मारी देलों गेले ?''

''हम्में खुद्दे नै जानै छी, तें की बतैयौं । परसू हुनी रोजानै नाँखी जंगल गेलों छेलै । साँझो तांय नै लौटलै तें राते-रात हम्में थाना पहुँचलां । शाहिद बाबू दरोगा आरो हमरों पति में अच्छा जान-पहचान छेलै । शाहिद बाबू लें, सरदार रों संदेश हमरे पति लै कें जाय छेलै । हम्में जबें हुनका सें आपनों पति के बारे में पूछलियै तें हुनी चौकी पड़लै । हमरा समझाय-बुझाय कें घोंर भेजी देलकै । कल सँझकी बेरा हुनी हमरा लुग ऐलै आरो कहलकै, 'हमरा बहुत्तें दुख छै कि हीरा कें कोय्यों कुल्हाड़ी सें काटी छेलैं छै । ओकरों लहास पोस्टमार्टम वास्तें गेलों छै । कुछुवे देर में तोरा लहास मिली जैथौं ।' ई सुनी कें तें हम्में वहीं ठां बेहोश होय गेलां । जबें होश ऐलों तें लहास गाड़ी में रखलों होलों छेलै । शाहिद बाबू दू सिपाही साथें लहास लैकें हमरों घोंर ऐलों छेलात आरो क्रिया-करम रों सब्भे टा इन्तजामों हुनिये करलें छेलात । राते-रात हमरों पति कें सारा पर जलैलों गेलों छेलै ।''

एतना कहतें-कहतें ऊ जनानी फूटी-फूटी कें कानें लागलै ।

''आबें अपना में ढ़ाढ़स बांधलै सें निककों । हम्में जल्दिये कातिल रों खात्मा करी देवै । हों, एक बात आरो, तोहें जे कुछ हमरा सें बतैलै छौ, ओकरों बारे में कहीं कुछ नै बतैवौ । शाहिद दरोगो सें ने ।''

जखनी जनानी आरो फैसल रों बीच ई सम्वाद चली रहलों छेलै, तखनिये एकटा बुजुर्ग आदमी वै ठां आवी गेलै, जेकरों पीछू दू आदमी चार कुर्सी लेलें होलें छेलै । बुजुर्ग नें फैसल दिश देखतें कहलकै, ''आपनें सिनी बहुत देरी सें ठाड़ों छियै । ला, कुर्सी पर बैठी कें बात करों ।''

''जी धन्यवाद'' फैसल ने हाथ जोड़तें ऊ बुजुर्ग आदमी कें कहलकै, ''आबें हम्में चलवै । हीरा माँझी के बारे में जानै लें आवी

गेलों छेलियै । मजकि कोय खास बात मालूम नै हुएँ पारलै ।''

''हों, बेचारा शरीफ आदमी छेलै । मेहनत-मजदूरी करी आपनों आरो बीबी, बच्चा रों पेट पाले छेलै । नै जानौं, कोन जालिमें ओकरों मूड़ी काटी लेलकै ।''

''अच्छा हम्में चलै छियै ।''

''नै, नै, हेनों नै हुएँ पारें । आपनें ई गरीब के कुटिया में चलियै आरो कम-से-कम चाय तें जरूरे ग्रहण करियै ।''

''चाय के आमंत्रण लेली धन्यवाद । इखनी हमरा कुछ जरूरी काम छै, यै लेली हम्में कभियो आवी कें पीवी लेवै ।''

''फेनू आवै के बाते पर हम्में छोड़ी रहलों छियौं । होना कें हमरों नाम मौलाना बख्शी छेकै । याद रखवा ।''

''जरूर-जरूर चचा जान ।'' ब्रेशा कहलकै ।

''जुग-जुग जिओं बेटी, सदा खुश रहों ।''

''देखलो साहब, हिनका आशीर्वादो मिली गेलै ।'' इन्सपेक्टर हँसते-हँसते बोललै ।

''भरलों भीड़ में हम्में चचा जान भी तें कहलें छियै ।'' ब्रेशा गाड़ी में बैठतें बोललै ।

''आवें कहाँ चलना छै ?'' इन्सपेक्टर अंजनी शर्मा गाड़ी कें स्टार्ट करतें पूछलकै ।

''घरे चलों । आइन्दा रों प्रोग्राम के बारे में सोचना छै ।''

''होना कें तोहें आपनों मनों में जरूरे कोय प्रोग्राम बनाय लेलें होभौ ।''ब्रेशां विश्वास भरलों आवाजों में कहलकै ।

''हौं, दू बात दिमागों में छै । पहिलें शाहिद कें टटोललों जाय या तें जंगल दिश रुख करना चाही ।''

''शाहिदे सें की मदद मिलें पारें ?'' इन्सपेक्टरें पूछलकै ।

''मदद ई मिलतै कि वैं जंगल रों सरदार के बारे में बतैतै ।''

''ओकरा की पता ?''

ऊ सरदार रों आदमी छेकै । ओकरा सब्भे टा बात मालूम

छै । हीरा रों लहासों के बारे में ओकरा डाकुए दिश सें हिदायत मिललों होतै कि शेरघाटी थाना में लहास आनलों जाय आरो जल्दी-सें-जल्दी ओकरों क्रिया-करम करी देलों जाय । यही कारण छेकै कि शाहिद नें रातो-रात आपनों खर्च पर लहास कें जलाय देलकै ।''

''मतर शाहिद......?''

''मतर-अतर रों कोय गुंजाइश नै छै । आबें ई बात साफ होय गेलों छै कि शाहिद नें पोस्टमार्टम रिपोर्ट दियै सें आरो विस्तार में बताय सें कैन्हें इनकारी छेलैं छेलै । यहू बात छेकै कि ओकरों पीठ पर सरदार के हाथ छै, यही लें वैं तोरा सें होनों कठोर बोली में बात करलकै, आरो हमरौ अकड़ दिखैलकै । यहू एक बात के स्पष्टीकरण होय जाय छै कि पुलिसवाला शेरघाटी थाना आवै वास्तें पैरवी कैन्हें लगावै छै आरो टाका कैन्हें खर्च करै छै ।

''कैन्हें ?''

''ये लें कि सरदार ओकरा हर महीना एक अच्छा रकम दै छै ।''

''ओहो, तें ई बात छै ।'' ब्रेशां एक ठण्डा साँस लेतें कहलकै ।

इन्सपेक्टरें गाड़ी रोकी देलकै । ऊ सब फैसल रों घर पहुँची चुकलों छेलै ।

ड्रायंग रूम में सोफा पर बैठतें इन्सपेक्टरें पूछलकै,'' हों, तें तोहें प्रोग्राम रों बारे में नै बतैलौ ।''

''एत्तें जल्दिये की छै, जरा सोचौ तें दा ।''

''अच्छा तें आबें हम्में चलै छियौं, दू घण्टा बाद ऐवौं ।''

''तोहें कहाँ चललौ ?'' ब्रेशां कुछ तेज आवाजों में पूछलकै ।

''ऊ, ऊ.....'' इन्सपेक्टरें कुछ बेबसी सें ब्रेशा दिश देखलें छेलै ।

''साफ कैन्हें नी बोलै छौ कि भुखाय गेलों छौ ।''

''जी हों, ठीक्के कहलौ ।'' इन्सपेक्टरों के मुँहों सें हठाते निकललै ।

फैसल कें हँसी आवी गेलै । कहलकै, ''बड़ी जालिम छों ब्रेशा । खैर, हम्में खाना लगवाय छियौं । तोहें यही खाय लें इन्सपेक्टर साहब ।''

''धन्यवाद, मजकि हम्में घरे जाय कें खैवे ।''

''घरों में की मिलतौं, यहाँ तें हारिल आरो तीतर पकलों होलों छै । साथे-साथ पुलावो ।''

पकलों सब खाना के नाम सुनी कें इन्सपेक्टर के ठोरों पर पानी चलै लागलै । वैं थूक रों घूँट कँठों के नीचें उतारतें बोललै, ''मतर........''

''कुछुओ नै'' फैसल नें कहलकै,'' ब्रेशा, जा आरो खाना निकलवावों । तोरों हाथों के पकलों शिकार जों इन्सपेक्टर साहबें नै खैलकै तें हिन्हीं जिनगी भर पछतैता ।''

ई बात सें ब्रेशा कें सचमुच गुमान होय गेलै । ऊ अकड़तें होलें उठलै आरो वैठां सें भीतर चल्लों गेलै ।

खाना परोसलों गेलै आरो दोनों खाना पर डटी गेलै । खानाहैं के दौरान फैसल नें कहलकै, ''शाहिद सें कुछ उगलवाय लैके मतलब छै कि ओकरा पर सख्ती करलों जाय, जे संभव नै छै ।

''आबें रहलै जंगल रों बात, तें कल हम्में जंगल देखै लें चलवै—शिकारी रों भेष में । हमरा वहाँ जैय्ये लें पड़तै, नै तें जंगल में घुसै के आरो कोय दूसरों कारण हम्में पैदो ने करें पारौं । जंगल रों सरदार एकदम ज्योतिष बुझावै छै। एकरों गिरोह ढेरे आदमी के संगठन होतै । से ओकरा तक पहुँच बनैवों आसान नै होतै । नै जानौं, कत्तें कठिनाई सें गुजरै लें पड़ें । यै लेली चाहै छियै कि हम्में अकेल्ले वै ठां जाँव ।''

''ई केना हुएँ पारें । हमरौ सिनी तोरों साथ चलवै ।'' एक्को क्षण बिना रूकले इन्सपेक्टर अंजनी बोली पड़लै ।

''आरो नै तें की, अकेला से तें कुछु साथे भला ।'' ब्रेशा बोली पड़लै ।

''मतरकि तोरों वहाँ कोय कामे नै छै । तोहें यही रहो तें अच्छा ।'' फैसल ने ब्रेशा ओर देखतें कहलकै ।

''नै, नै, हम्में साथ चलवै । जंगल में जासूसी आय तक नै करलें छियै । ई दाफी एकरों तजुरबा होय जाय ।''

''फेनू कहियो तजुरबा होय जैतै । ई दाफी जंगल में खतरनाक लोगों सें वास्ता छै, यै लेली तोहें नै जैवा ।''

''तें की, खाली तोरे दोनों जैभौ ?''

''ई तें कलकों मुआइना के बादे मालूम हुएँ सकतै कि वहाँ कत्तें आदमी के जरूरत पड़तै ।''

''तबें तें हम्मू चलवै ।''

''मतर शिकार के परमिट लिएँ पड़तै । बिना इजाजत हम्में शिकार कना करवै ।'' इन्सपेक्टर ने फिक्रमन्द बोली में कहलकै ।

''ई हमरा पर छोड़ी दा ।'' फैसल बोललै ।

''फेनू तें कल तांय लेली इजाजत दें ।'' इन्सपेक्टरें इजाजत चाहलकै ।

''इजाजत छौं, मतर, जों कुच्छू खास बात मालूम होय जाँव, तें टेलीफोनों पर हमरा जरूरे सूचित करियों, आकि आपन्हैं आवी जैवौ ।''

अब तांय ऊ सब खाना खाय चुकलों छेलै । इन्सपेक्टर रों गेला के बाद ब्रेशा आपनों क्वार्टर चल्ली गेलै । आरो फैसल ढेर-ढेर चिन्ता में डूबी गेलै ।

अगला दिन सात बजे सें पहिलैं इन्सपेक्टर अंजनी शर्मा साहब पहुँची गेलै । फेनू दानिशो आवी गेलै । ब्रेशा तें आरो पहिले

आवी चुकलों छेलै । चाय पीला के बाद सब्भे धन्वा-मन्वा के जंगल दिश रवाना होय गेलै ।

जंगल रों नगीच पहुँची कें फैसल नें गाड़ी रोकी देलकै । आरो फेनू सब पैदल चली पड़लै । सब्भे के हाथों में बंदूक छेलै, जबें कि ब्रेशा एयरगन लेलें होलें छेलै । भेषधारन सें तखनी सब शिकारिये लागी रहलों छेलै । बस फैसल के हाथों में बंदूक के जग्घा में रायफल छेलै ।

पूरब दिश सें चलतें होलें ऊ सब कुछ दूर तक चलथैं रहलै । फेनू एक जग्घा पर रूकी कें फैसल नें कहलकै,'' हीरा पूरबे दिश निगरानी रों काम करै छेलै । यहीं सें अभियो ई दिशा के निगरानी होतें होतै । ई दिशों सें जंगलो साफ छै आरो आसानी सें जंगल में दाखिल होय लें रास्ता बनलों होलों छै । जंगल बीच में जाय कें घन्नों होतें बुझावै छै । आरो पच्छिम दिश तें आरो घन्नों होय गेलों छै । यै लेली हमरा सिनी कें पच्छिम दिश ही चलना चाही ।''

एतना कहना भर छेलै कि सब पच्छिम दिश ही बढ़ी गेलै । जवें ऊ सब जंगल रों पच्छिम हिस्सा में पहुँचलै, तखनी दिन के बारह बजी रहलों छेलै । गाड़ी सें आवै में दू घण्टा लागलों छेलै ।

हिन्नें जंगल एकदम्में घन्नों छेलै, यहाँ तक कि भीतर तक जैवों मुश्किल होय रहलों छेलै । पहाड़ी के बगल सें नीचें-नीचें नदी बही रहलों छेलै । ऊ सब नदी के सीधे में दक्खिन दिश बढ़लै कि तखनिये एकाएक दानिश चिल्लाय पड़लै ।

दानिश के चिल्लाना छेलै कि सब्भे एक्के साथ होशियार होय उठलै । दानिश के आवाज पर चीतां घूमी कें ऊ सब के दिश देखलकै आरो ऊ छलांग मारतें जंगल में घुसी गेलै ।

''ई हिस्सा बड्डी खतरनाक छै ।'' इन्सपेक्टर शर्मा फुसफुसैलों आवाज में बोललै ।

''जंगल में खतरा सिनी के होना तें तैय्ये छै । एतनै नै, जंगली इन्सान तक खतरनाक होय छै । आबें यही जंगल में देखों, जंगल रों

सरदार तांय खतरनाक छै । हिन्नें चीताहौ खतरनाक बुझैय्ये रहलों छौं। हम्में तें फैसला करी लेलियै कि हिन्हैं मचान लगाय कें चीता के शिकार करवै ।''

''चीता रों शिकार ।'' दानिशें आचरज सें पूछलकै ।

''हों, आबें शिकार के इरादा करी लेलें छियै । यही दिशा सें होलें एक मील अन्दर घुसी कें मचान बनैवै । चार मचान के जरूरत पड़तै । एक पर हम्में बैठवै, दूसरा पर इन्सपेक्टर, तेसरा पर दानिश, आरो चौथों पर ऊ आदमी, जे हाँका लें बैठतै ।

''मजकि हमरा सिनी यहाँ शिकार खेलै लें नै ऐलों छियै ।'' ब्रेशा बोललै ।

''शिकारो वहें काम रों एक हिस्सा छेकै ।''

''ऊ केना ?''

''देखों, देखों, ऊ के आवी रहलों छै ।''

दानिशें ऊ आदमी दिश सबके ध्यान दिलैलकै, जे जंगल सें निकली कें ओकरे सिनी दिश बढ़लों आवी रहलों छेलै ।

ऊ आदमी के हाथों में रायफल छेलै । फैसल नें ऊ दिश देखी कें मनों में निशान निश्चित करें लागलैं, जहाँ सें निकली कें ऊ आदमी ओकरों सिनी के दिश आवी रहलों छेलै ।

फैसल आरनी सें चार कदम के दूरी पर रुकी कें ऊ आदमी बोललै, ''तोहें सब के छेकौ आरो यहाँ की करी रहलों छौ ?''

''हम्में शिकार खेलै लें ऐलों छियै, मतर तोहें के छेकौ ?'' फैसल बोली पड़लै

''की तोरों पास शिकार खेलै के परमिट छौं । हम्में फॉरेस्ट गार्ड छेकियै । जंगल रों निगरानी करै छीं ।''

''हों परमिट छै ।'' आरो फैसल ने दूरहे सें परमिट दिखैतें कहलकै ।

''ई इलाका बड्डी खतरनाक छै । चीताहौ के भरमार छै । तोरा सिनी के यै ठां रहवों ठीक नै ।''

''मजकि हम्में तें हिन्हैं चीता रों शिकार खेले लें चाहै छियै ।'' बात करतें-करतें फैसल ऊ आदमी के बेहद करीब पहुँची गेलों छेलै । परमिट ओकरों हाथे में छेलै । वैं ओकरा देखैवों शुरु करलकै । गार्डें जैन्हैं हाथ बढ़ाय कें परमिट लै लें चाहलकै, फैसल नें ओकरों रायफल झपटी लेलकै । गार्ड कें समझाऔ में अभी में कुछुओ नै ऐलों छेलै कि फैसल नें एक कसलों झापड़ ओकरों कनपट्टी पर जमाय देलकै, साथे-साथ घुटना सें ओकरों पेटों पर आक्रमण करलकै ।

ई सब एत्हैं जल्दी सें होलों छै कि केकरौं कुछ समझ में नैं ऐलै ।

''एकरा उठावों आरो गाड़ी तक लै चलों । ''फैसल नें इन्सपेक्टर आरो दानिश सें कहलकै ।

एक हाथ सें कनपट्टी आरो दूसरों हाथ सें पेट कें पकड़लें ऊ आदमी अभी तांय दुहरा बनी चुकलों छेलै । इन्सपेक्टरें दोनों गोड़ आरो दानिशें दोनों हाथ पकड़ी कें ओकरा टांगी लेलकै आरो गाड़ी के पिछुलका सीटों पर बिठाय देलकै । आरो फेनू आपन्हों बैठी रहलै । कुच्छू सोची कें दानिशें बन्दूक के रुख वहा आदमी दिश करी देलकै ।

फैसल ड्रायविंग सीट पर बैठलों होलों छेलै आरो ब्रेशा ओकरों दोसरो तरफ बैठली छेलै । आबें गाड़ी बड़ी तेजी सें वापिस होय चललों छेलै

कुछुवे देर बाद गार्ड संभली कें बैठी गेलै आरो बिगड़लों बोली में बोललै, ''तोरा सिनी बहुत्ते खराब करलें छौ । हमरा मारलें-पीटलें छौ, हमरों रायफल छीननें छौं आरो आबें हमरा अगुवा करी लेलें जाय रहलों छौ । अभियो कहैं छियौं कि हमरा छोड़ी दा, नै तें एकरों अंजाम बड्डी खराब होतौं, ''जरा हम्मूं तें जानियै कि अंजाम बुरा के करतै ।'' फैसल ने गाड़ी चलैतै-चलैतें पूछलकै ।

''हम्में आपनों अफसर सें शिकायत करवै आरो तोरा सिनी के खिलाफ केस करवौं ।''

''तोरों अफसर के छेकौं आरो हमरा सिनी के छेकियै, तोरा की मालूम ।''

ई बात सुनत्हैं ऊ आदमी चुप होय गेलै आरो दानिश के हाथ में तनलों बन्दूक कें बड़ी गौर सें देखें लागलै, जेना मौका मिलत्हैं वैं झपटी लेतै ।

पीछू लगलों आइनानुमा शीशा में दानिशें हौ आदमी के नीयत के अन्दाजा लगाय लेनें छेलै; यही लें इन्सपेक्टरें सें बोललै, ''तहूँ होशियार रहों । ई आदमी पर ठीक-ठीक निगरानी रखों ।''

दानिश के बात सुनी इन्सपेक्टर शर्मा नें आपनों रिवाल्वर निकाली लेलकै आरो ऊ आदमी रों बगल सें लगाय देलकै ।

आपनों घोंर के ड्रायंग रूम में पहुँची कें फैसल ने ऊ आदमी रों हाथ-गोड़ बान्ही देलकै आरो जमीनों पर लेटाय देलकै । फेनू अन्दर जाय कें आपनों चाबुक लै आनलकै ।

इन्सपेक्टर, ब्रेशा आरो दानिश, ई सब कारवाई कें खामोशी साथें देखी रहलों छेलै ।

''आबें बतावों कि तोरों नाम की छेकौं ?'' फैसल चाबुक कें हाथो में संभालतें बोललै ।

''वकरम ।''

''केकरों वास्तें काम करै छौ ?''

''हम्में सरकारी आदमी छेकियै ।''

''एकदम झूठ ।'' फैसल नें ओकरों पेट पर चाबुक रसीद करतें कहलकै ।

''तोहें हेना कें मारै छौ केन्हें ?'' हौ आदमीं बिलबिलैतें होलों कहलकै ।

''तोहें सच-सच बतावों कि केकरा लें काम करै छौ ।''

''हम्में बताय देलियौं नी ।''

फैसल कें रहलों नै गेलै । वैं दू-चार बार चाबुक रसीद करी देलकै । चाबुक के आवाज गूंजी उठलै—सड़ाप, सड़ाप । फेनू आपनों हाथ रोकतके बोललै, ''जल्दी बतावों ।''

एतनै टा बोलै लें जेना फैसल नें हाथ रोकलें छेलै आरो

फेनू—सड़ाप, सड़ाप, सड़ाप, सड़ाप ।

ई दाफी चाबुक ऊ आदमी रों अंग-अंग पर गिरलों छेलै, जेकरा सें ऊ जमीन पर लेटना शुरु करी छेलैं छेलै ।

ब्रेशा आपनों आँखी पर अँगुली राखी लेलें छेलै ।

चाबुक कें रोकतें आरो आपनों हाथों सें ओकरा लपेटतें फैसल नें ऊ आदमी सें कठोर शब्दों में कहलकै, ''तोहें की समझै छौ हमरा तोरों बारे में कुछ पता नै छै । तोरों काम जंगल रों पच्छिमी हिस्सा के निगरानी करवों छेकै । तोहें सरदार के आदमी छेकौ । तोरों पहुँच ऊ शीशम गाछ तांय छै, जेकरों तना सें रस्सी लटकै छै आरो ओकरों आगू तोरा कुछ नै मालूम ।''

वकरम नें आँख फाड़ी फैसल के दिश देखलकै । फेनू हाथ टेकी कें जमीन पर बैठे के कोशिश करतें बोललै, ''तोरा सब पता छौं, सब कुछ जानै छौ, तबें हमरा मारी रहलों छौ कैन्हें ?''

''आबें तोहें यही कहवौ । चलों जल्दी-जल्दी तोहें आपनों बारे में विस्तार सें बतावों ।''

''पूछों, की पूछै छों ।'' ऊ आदमी हारलों आवाज में बोललै ।

''तोहें सरदार के चंगुल में केना फसलौ ?''

''हम्में छोटों-मोटों चोरी करै छेलियै । एक दिन चोरी करी कें भागी रहलों छेलियै कि हमरा एक ठो आदमी मिललै । वैं कहलकै कि हम्में ओकरों साथ चलौं, नै तें वै पुलिसों कें खबर करी देतै । हम्में ओकरों साथ यहाँ आवी गेलियै । आरो तभिये सें हम्में सरदार लेली काम करी रहलों छियै ।

''तोहें कत्तें समय सें ओकरों लेली काम करी रहलों छौ ?''

''ठों महीना सें ज्यादा होय गेलों छै ।''

''तोरों ड्यूटी की छेकौं ?''

''भोर आठ बजे सें लॆ कें सँझकी छों बजे तांय जंगल रों रखवाली करवों ।

''ई काम लेली तोरा की तनख्वाह मिलै छौं ?''

“दू हजार रूपया महीना ।”

“ई रास्ता पर तें मोटरगाड़ियो कम चलै छै, फेनू तोहें कोन सवारी सें यहाँआवै आरो जाय छौ ?”

“एक ऑटो रिक्सा हमरा लै जाय छै आरो पहुँचाय दै छै ।”

“यानी कि तोरों साथ आरो भी लोग छै, जेकरा तोहें जानै छौ ?”

“जी हों, फैज छै आरो इन्शा भी छै ।”

“ई लोग कहाँ रहै छै ?”

“ई हमरा नै मालूम, कैन्हें कि बात करै के हमरा इजाजत नै छै । बस ऑटो रिक्सा के ड्रायवर के मुँहे सें हम्में ऊ दोनों के नाम जानै छियै । ड्रायवर कभियो-कभियो नाम सें ऊ दोनों कें पुकारै छै ।”

“ई ऑटो रिक्सा की तोरा घरों सें लै जाय छै ?”

“नैं, गांधी मैदान के पूरब दिश अमलतास गाछी के सामना ठीक साढ़े सामत बजें ऊ ऑटो रिक्सा आवी जाय छै । वहीं हमरा तीनों पहुँचै छियै । साढ़े सात सें पहिले वहाँ आवै सें हमरा सिनी कें मनाही छै । फेनू सँझकी वक्ती वही ठां हमरा सिनी कें पहुँचाय देलों जाय छै ।

“ऑटो रिक्सा के नम्बर की छेके ?”

“बी. एच. ए 197104”

“तोहें जंगल में आरो की कुछ देखलें छौ ?”

“कुछुवा नै । हमरा आपनों काम सें ही मतलब राखै के हिदायत बार-बार देलों जाय छै ।

“ई हिदायत के दै छै ?”

“हम्में नै कहें पारौं कि ऊ के छेकै । हमरा सिनी ओकरा बस जंगल के सरदार के नामों से जानै छियै । जबें हमरा कोय खास हिदायत देलों जाय छै, तें आँखी पर कारों पट्‌टी बाँधी कें कोय तहखाना में लै जैलों जाय छै । ऊ तहखाना की छेकै, बस एक बड़ों घोंर छेकै, जेकरों एक कमरा के दीवार सें आवाज ऐतें रहै छै । ऊ

हमरा सिनी के हिदायत दै छै आरो हमरा सिनी खाड़ों रहै छियै ।''

''तोहें ऊ तहखाना के बारे में कभियो पता लगावै के कोशिश नै करलै ?''

''कभियो नै । हम्में कोशिश करतियै तें अब तांय जीत्तों नै होतियै । जे लोगों कें जे काम मिलै छै, ओकरा सें आगू कुछुवो करवों के सजाय सिरिफ

मौत होय छै ।''

''तें कोय्यों पुलिस कें कैन्हें नी खबर करलकै ?''

''पुलिस'' पुलिस के नामे सुनतें वकरम हँसलै, ''बड़का-बड़का पुलिस अफसर जंगल के सरदार सें भय खाय छै, फेनू वैं पुलिसवाला के टाका दै कें गुलामो बनाय लै छै ।

''ई तोरा केना पता चललौं ?''

''ई शेरघाटी थाना छै नी, वहाँकरों दरोगा शाहिद सें हमरों जान-पहचान छै । ऊ हर महीना टाका लै लें आवै छै, आरो हम्में आपनों निगरानी में ओकरा टाका दिलवावै छियै ।''

''शाहिद कें हर महीना टाका मिलै छै ?''

''वहाँ गिनी कें टाका नै देलों जाय छै, बलुक बड़ों मुँह के घड़ा में टाका भरलों रहै छै; वहीं सें टाका निकालै लें होय छै । दरोगा साहब लेली तीन मुट्ठी, जमादार साहब लेली दू मुट्ठी आरो सिपाही सिनी लेली एक्के मुट्ठी टाका निकालै लें होय छै । शाहिद साहबे ई टाका निकाली कें लै जाय छै । कैन्हें कि हुनकों सिवा केकरौ जंगल के भीतर जाय के इजाजत नै छै । ऊ थैला में सौ आरो पचास के टाका होय छै ।''

''ओहो.....'' फैसल नें कुछ सोचतें कहलकै, ''हीरा मांझियो, वही जंगल रों निगरानी के काम करै छेलै । ओकरा कैन्हैं मारी देलों गेलै ?''

''हम्में कोय हीरा के नै जानै छियै, मजकि एत्तें मालूम छै कि कोय मारलों गेलों छै ।''

“केना पता चललै ?”

“बस संयोगे सें समझों कि पता चली गेलै । यहाँ सरदार के बारे में पता लगावै वाला कें सजा ओकरों मूड़ी काटी कें देलों जाय छै ।”

“की पहिलौं हेन्हों होलों छै ?”

“हों पहिलौं कै एक ठो लोगों के मूड़ी काटलों गेलों छै ।”

“तोरा ई बात केना मालूम होलै ?”

“जबें हम्में शुरु-शुरु में जंगल ऐलों छेलियै, तें अकरम नाम के एक आदमी जंगल रों उत्तर दिश निगरानी करै छेलै । कभियो-कभियो हमरा दोनों एक दूसरा सें मिलियो लियै । अकरम ऊ सरदार के टोह में रहै छेलै । वहीं हमरा बतैनें छेलै कि सरदार के आदमी मालगाड़ी लूटी लै छै । चलती गाड़ी सें वै सिनी डब्बा अलग करी दै छै, आकि फेनू गाड़िये पर सवार होय कें डब्बा तोड़ी, वै में घुसी जाय छै आरो माल गिरैतें रहै छै । तबें यहाँ-वहाँ फैललों आदमी माल कें जंगल के अन्दर लै आनै छै । कार, स्कूटर, लोहा रों सामान, यहाँ तक कि गल्ला तक ई लोग उतारी लै छै । अकरम नें हमरौ सें कहलें छेलै, ऊ जग्घों के पता लगावै लें, जैठां सरदार जंगल रों भीतर रहै छै, या फेनू जहाँ कि सब्भे टा माल लै जैलों जाय छै । मतर हम्में इनकार करी छेलैं छेलियै, कैन्हें कि अकरम नें हमरा बतैलें छेलै कि टोह लै वाला कें मौत के घाट उतारी देलों जाय छै । ओकरों गल्लों काटी देलों जाय छै । साथे-साथ ऊ कटलों गल्ला कें हमरा सिनी कें देखैलों जाय छै आरो धड़ फल्गू नद्दी में फेकवाय देलों जाय छै । ई सब्भे टा बात हमरा अकरमे बतैलें छेलै । पिछला महीना एक दिन हमरा तहखाना लै जैलों गेलै । वहाँ हम्में अकरम के कटलों गरदन लटकलों देखलियै, तबें हम्में समझी गेलियै कि ओकरों गर्दन कैन्हें काटलों गेलों छेलै । हीरा साथे यहाँ होलों होते ।”

“मतरकि ओकरों धड़ तें सड़क के किनारी में मिललों छेलै ।”

“हमरा मालूम नै । एत्तें जरूर मालूम छै कि दू आदमी ई धड़

के बारे में हमरा सें पूछी रहलों छेलै कि एक बन्द बोरा में हम्में कोय धड़ तें ने देखलें छियै ?''

''ऊ सब आदमी के छेलै ?''

''हम्में केकरौ नै पहचानै छेलियै । बस एतनै कहें पारौं कि ऊ दोनों बड़ी परेशान छेलै । आबें बात समझै में आवै छै कि ऊ दोनों परेशान कैन्हें छेलै

''कैन्हें छेलै ?''

''लहास कें फल्गू नदी में बहावै लें लै जैतें होतै आरो बोरा रास्ताहै में केन्हैं कें गाड़ी सें गिरी गेलों होतै । यही बात होतै ।''

''हों, ई बात हुएँ पारें ।'' फैसल नें मूड़ी हिलैतें कहलकै ।

''मतरकि आबें हमरों की होतै । तोहें हमरा यहाँ लै आनलों छौ । डयूटी पर नै पावी कें हमरों तलाशी शुरु होय गेलों होतै ।''

''एकरों फिकिर तोहें नै करों । अच्छा, आबें ई तें बतावों कि तोहें रहै छौ कहाँ आरो तोरों घरों में के-के लोग छौं ?''

''हम्में मुरादाबाद मुहल्ला में रहै छियै । यहाँ अकेले छियै । एक कोठरी किराया पर लेलें होलों छियै ।''

''एक बात सच-सच बतावों–की तोहें आपनों ई कामों सें सन्तुष्ट छों ?''

''नै हरगिज नै, हम्में चोरी हेनों घटिया काम जरूरे करै छेलां, ओकरों कारण छेलै । हम्में यहाँ नौकरी के खोजों में ऐलों छेलियै, मतरकि जबें नौकरी नै मिललै आरो भुखले मरै के नौबत आवी गेलै, तबें हम्में चोरी करें लागलें छेलां । मतरकि एकरों मतलब है नै छेकै कि हमरों जमीर मरी चुकलों छै । जंगल रों ई सरदार देश के कत्तें नुकसान करी रहलों छै, ई तें हमरा सें देखलों नै जाय छै । हम्में तें चाहै छियै कि सरदार मारलों जाय, ताकि गाड़ी लूटै रों सिलसिला बन्द हुएँ । हम्में ई संबंध में तोरा जे कुछ बतैलें छियौं, ई सब हम्में कभियो नै बतैतियौं, चाहे तोहें हमरों खाले कैन्हें नी उधेड़ी देतियौ आकि जाने सें कैन्हें नी मारी देतियौ । मतरकि जबें हम्में जानी लेलियै कि तोहें

ओकरों बारे में बहुत कुछ जानी लेलें छौ आरो तोहें दोसरो पुलिसवाला में सें नै छेकौ, जे सरदार के टाका पर पलै छै, तें हम्में यहाँ उचित समझलौं कि तोरा सब्भे कुछ सही-सही बताय दौं ।''

''धन्यवाद वकरम'' फैसल ओकरों दिश बढ़लै आरो बैठी कें रस्सी खोलें लागलै । फेनू ब्रेशा के ध्यान खीचतें कहलकै, ''ब्रेशा, फर्स्ट ऐड बॉक्स लै आनों, वकरम के घाव पर लगाना छै ।''

ब्रेशा दोसरों कोठरी सें फर्स्ट ऐड बॉक्स लै आनलकै ।

''वकरम, एक विचार हमरों मनों में ऐलों छै, कैन्हेंनी तोहें जंगल वापिस लौटी जा । हम्में तोरा वैठां पहुँचाय दै छियौं । तोहें आपनों डयुटी करना शुरु करी दौ ।''

''ऐकरा सें की होतै ?''

''कल आकि परसू हम्में जंगल पर चढ़ाय करवै । केन्हैं कें शीशम के ऊ गाछ के आगू जैवै आरो तहखाना के रास्ता तलाश करै के कोशिश करवै ।''

''की तोहें वै में कामयाब होय जैवौ ?''

''नाकामी नाम के कोय शब्द हमरों डिक्शनरी में नै छै । हम्में आपनों जान के बाजी लगाय कें ऊ अपराधी सिनी के खत्म करै के संकल्प लै छियै ।''

''तबें तें ठीक छै, हम्मुओ तोरों साथ छियौं ।''

''तोहें कोशिश करों कि ऊ सबके बारे में आरो कुछ विशेष जानकारी मिलें सकें, मतरकि सावधानी साथें । कल नै तें परसू हम्मू धावा बोली देवै ।''

''हम्में कोशिश करवै ।''

''धन्यवाद, आवों खाना खाय लें । खाना खैला के बाद हम्में तोरा वहाँ पहुँचाय ऐवौं ।''

''खाय-बाय के कुछ जरूरत नै छै । हमरा जल्दी-सें-जल्दी वही ठां पहुँचाय दें ।''

''ब्रेशा भोलू सें खाना लगाय लें कहों ।''

जबें ब्रेशा वैठां सें हटलै तें फैसल नें वकरम सें पूछलकै,'' एक बात जबें कोय ई घाव के बारे में पूछतौं, तबें तोहें की कहभौ ?''

ई सुनी के वकरम खामोश होय गेलै ।

''सुनों, देहों परकों घाव तें दिखाय में नै आवै छै, खाली एक गाल पर हलका रं खरोंच छै, कही दियौ कि कोय झाड़ी सें खरोंच लागी गेलै ।''

''यहू कहें सकै छौं कि जंगली सूअर नें हमला बोली छेलैं छेलै ।''

''हमरों ख्याल सें ई उचित नै होतै । झाड़िये वाला बात ठीक लागै छै ।''

एतन्हैं में खाना आवी गेलों छेलै । दोनों खाना के मेज पर बैठी रहलै आरो सब्भे खामोशी सें खाना खैतें देखी रहलों छेलै । खाना खतम होलै आरो फैसल वकरम कें लै कें ओकरा जंगल पहुँचाय लें निकली गेलै ।

ब्रेशा, इन्सपेक्टर, दानिश वहीं ड्रायंग रूम में बैठलों रही गेलै ।

''भाय, कमाल होय गेलै । वकरम सें सब कुछ मालूमो होय गेलै आरो ऊ हमरों विश्वासो में आवी गेलै ।''

''ई सब फैसल साहब के सूझ-बूझ रों नतीजा छेकै इन्सपेक्टर साहब । तहूं आपना में ई गुण पैदा करों, आपनों आप में घुन नै लगावों ।''

''देखों ब्रेशा, हम्में तोरा सें मुँह नै लगावै लें चाहै छियौं । तोहें हमरों पीछू कैन्हें लागली रहै छों ।''

''तोहें एत्तें कंजूस कैन्हें छों ?''

''हम्में कंजूस छियै ?''

''आरो नै तें की । एत्तें साल सें जान-पहचान छै । कभियो तोहें भोज-भात देलौ ? कै दाफी सॉफ्टी आरो आइसक्रीमें लें कही चुकलों छियौं । आरो सब बारी तोहें वादो करी कें दारी छेलैं छौ ।''

''हम्में व्यस्त आदमी छी । भूली जाय छियै, चलों अभिये खिलाय दै छियौं ।''

‘‘आवें बाजार तांय के जाय । भोलुए कें भेजी मंगवाय लै छियै ।’’

‘‘यानि कि आय इन्सपेक्टर साहब सें खैय्यै के रहवौ ।’’ दानिश बोलतें-बोलतें हाँसें लागलै ।

‘‘तें तोरों पेट में दरद कथी लें होय रहलों छौं ।’’ इन्सपेक्टर शर्मा चिढ़ी कें बोललै ।

‘‘यही लें कि सॉफ्टी तें हमरौ खाना छै ।’’

दानिश के बात सुनी इन्सपेक्टर जबाब दै के बदला चुप होय गेलै

ब्रेशा आवाज दिएँ लागलों छेलै, ‘‘भोलू, भोलू ।’’

भोलू जबें आवी गेलै, तें इन्सपेक्टरें पचास के टाका ब्रेशा के दिश बढ़ाय देलकै । ब्रेशा झट सें ओकरा लेलकै आरो भोलू दिश बढ़ैतें कहलकै, ‘‘ले भोलू, चार ठो सॉफ्टी लै आन, जरा जल्दिये ।’’

‘‘हम्में तें खाना खाय रहलों छेलियै, आपनें रों आवाज सुनलियै तें बीचे में खाना छोड़ी कें आवी गेलियै ।’’ भोलू जवाब देलकै ।

ठीक छै, पहिलें खाना खाय ला, ओकरों बादे लै ऐय्यों । टाका राखी ला ।’’ ब्रेशा टाका थमैतें बोललै ।

‘‘मतरकि है चार सॉफ्टी....’’ इन्सपेक्टर आगू कहतें-कहतें रुकी गेलै ।

‘‘एक हम्में, एक तोहें, एक दानिश आरो एक भोलू ।’’ ब्रेशां विस्तार सें समझाय देलकै ।

‘‘हम्में सॉफ्टी नै खाय छियै ।’’ इन्सपेक्टर बोललै ।

‘‘तबें तोरों हिस्सा हम्मीं खाय लेवै ।’’ ब्रेशां लगले उत्तर देलकै ।

‘‘गला खराब होय जैथों । ई सॉफ्टी एक दाफी में नै खाना चाही ।’’

‘‘तोहें हमरों फिकिर नै करों । आपनों पचास टाका के मातम करना छौं, तें घोंर जाय कें करियों ।’’

‘‘देखों, फेनू वहा रं के बात करना तोहें शुरु करी देलौ ।’’

‘‘अच्छा छोड़ों, हमरों चुटकुला पर ध्यान दा ।’’ दानिशें बात के रुख बदलतें कहलकै ।

‘‘तोहें बहुत्ते चुटकुला में सुनावै छौ ।’’ ब्रेशा टोकलकै ।

‘‘ई पत्रिका वाला हेन्हें चुटकुला छापै छै तें हम्में की करौं ।

‘‘कोन ठो पुस्तक तोहें अध्ययन करै छों ?’’

‘‘ढोल बजै छै ढम्मक ढम, बुतरू के तुतरू, बाजै बीन बजावै तीन, एक छड़ी पर अंडा नाचै, तुत्तक मुत्तक ।’’

‘‘ई सब तें बच्चा केरों किताब छेकै ।’’ इन्सपेक्टर हाँसें लागलै ।

‘‘ये में हाँसै के की बात छै । अभी तें हम्में टीन एजर छियै, स्टूडेण्ट छेकियै ।

‘‘अच्छा चुटकुला की छेकै ?’’

‘‘ई अंगिका लोक पत्रिका में छपलों छै । मनगढ़न्त नै कही रहलों छियौं

‘‘ई पत्रिका वहाँ सें निकलै छै ?’’ इन्सपेक्टरें पूछलकै ।

‘‘लहेरिया सराय, दरभंगा सें । त्रैमासिक छेके । ई पत्रिका रों सम्पादक के नाम छेकै डॉ. सकलदेव शर्मा, आरो दाम—पच्चीस टाका’’

‘‘बस, बस होय गेलै । हमरा पत्रिक रों आगे वर्णन नै चाही । चुटकुला सुनावों’’ कि तभियै ब्रेशां बात कें काटतें बोललै ।

‘‘तें सुनों ।’’ दानिश नें गला साफ करतें कहना शुरु करलकै, ‘‘एक आदमी हर वक्ती सोचतें रहै कि ओकरों बीबी ओकरा सें कहें कि वें नौकर कैन्हें नी राखी लै छै । आखिर वें एक ठो नौकर रखलकै । नौकर नें पूछलकै कि ओकरों वास्तें काम की होतै, तें ऊ आदमी कहलकै कि तोरा सोचै लें पड़तौं । नौकरें पूछलकै कि तनख्वाह की होतै ? तें ऊ आदमी कहलकै, ‘‘पाँच हजार ।’’ ई सुनी कें नौकरें फेनू पूछलकै, ‘‘आरो तारों की तनख्वाह छौं ?’’ तें ऊ आदमी कहलकै, ‘‘चार हजार ।’’ ई सुनी कें नौकर बोललै, ‘‘तबें तोहें

हमरा पाँच हजार केना देभौ ?'' तें ऊ आदमी कहलकै, ''यहें सोचै रों बात छै ।''

''आखिर ई चुटकुला सुनावै के मकसद की छौं ?'' इन्सपेक्टरें कुछ नै समझतें हुऍ पूछलकै ।

''चुटकुला सुनावै के कोय मकसदो होय छै की ?''दानिशें हैरत सें पूछलकै ।

मतरकि सोचैवाला चुटकुले कैन्हें सुनैलौं ?'' ब्रेशाहौं टोकलकै ।

दानिश दू-एक पल सोचतें रहलै, फेनू बोललै, ''सोचै के बात तें हमरा सिनी के बीच होना चाही । अभी तै होलों छै कि कल चीता रों शिकार खेललों जैतै, यानी एक किसिम सें धावा बोललों जैतै । तहखाना तांय पहुँचै रों कोशिश करलों जैतै । ओकरा सें पहिले मचान बैठै लें होतै । हमरो अभी डर मालूम होय रहलों छै । हौ चीता के इलाका छेकै । सुनलें छियै, बलुक है कहों कि कोय किताब में पढ़लें छियै कि चीता रों छलांग बड्डी ऊँच्चों होय छै ।''

''अरे, तोहें एत्तें बुजदिल कहिया सें होय गेलौ ।'' ब्रेशा हैरत में पूछलकै ।

''हम्में आदमी सें थोड़े डरै छियै । खाली जानवर सें, वहू में खूनी जानवर सें तें आरो डॉर लागै छै ।''

''सच पूछों तें चीता के शिकार खेलवों खुद कें मौत रों मुँह में डालवों छेकै ।'' इन्सपेक्टरें कहलकै ।

''तोरा केना मालूम ?'' ब्रेशां मजाक उडावै के अन्दाज में कहलकै ।

''तोहें तें कहवे करभौ, कैन्हें कि तोरौ तें घरों में रहना छौं । एक दाफी हम्में चीता रों मुँहों सें बची कें निकली गेलों छेलां ।''

''ऊ केना कें ?'' दानिशें पहलू बदलतें पूछलकै ।

''सुनों, शिकार पर गेलों छेलियै ।''

''चीता रों शिकार पर यानी तहूँ शिकार खेलै छौ ।'' ब्रेशां बड़ी गंभीरता सें पूछलकै ।

''कै साल होय गेलै । आखरी दाफी चीताहै के शिकार पर गेलों छेलियै । फेनू शिकार के नीयत सें कभियो जंगल नै गेलियै ।''

''एकरों मतलब होलै कि तोहें चीता के शिकार करी चुकलों छौं ?

''एकदम ।''

''की तोहें विस्तार सें बतैभौ ?'' दानिशें दिलचस्पी प्रकट करतें कहलकै ।

''बस समझों कि हम्में मौत के मुँहों सें बची गेलों छेलियै । अय्यो सोचै छियै तें रोआं खाड़ों होय जाय छै । चोरबत्ती के रोशनी में निशाना लगाय कें गोली चलैथैं एक दहाड़ सुनाय पड़लों छेलै । कि हठाते गाछ के ठारी पर रस्सी के बनलों होलों पन्द्रह फिट के हमरों ऊँच्चों मचान, डाली के टूटथैं जमीन पर आवी गेलै । हौ तें किस्मत अच्छा छेलै कि हाथ सें डबल बैरल के बन्दूक छूटी कें पत्थर सें जाय टकरैलै आरो गोली पत्ता सिनी कें चीरतें निकली गेलै आरो हौ ऊँचाई सें गिरलौ पर ओत्तें चोट नै लागलों छेलै । मचान टुटला के कारण रस्सी ई किसिम सें उलझी गेलों छेलै कि ऊ बीचे में लटकतें रहलै आरो हम्में झूलतें, जमीन पर आवी गेलां, जेना झूला रों पेंग भरलें रहौं आरो बीचे में रस्सी किनारा करी लेलें रहें । मतरकि वै वक्ती चोट-बोट के होशे कहाँ छेलै । जान बचाय रों फिकिर छेलै । फेनू घायल चीता कखनियों हमला करें सकें छेलै । मजकि अगला पन्द्रह मिनिट तांय कुच्छू हलचल नै होलै । रात आधों चाँद रों छेलै । जंगल एत्है घन्नों छेलै कि चाँदनी नीचें तांय नै पहुँचें सकें छेलै । कुच्छू देर तांय साँस रोकलें रहलौं । फेनू आपना कें संभाललां । घुटना आरो टखना रों चमड़ी छिली गेलों छेलै । पतलूनो बड़ी बेढंग तरीका सें फाटी गेलों छेलै, मजकि देह के आरो सब हिस्सा सही-सलामत छेलै ।

''बन्दूक रों पता नै छेलै । नै चोरबत्तिये जलाय कें गाँव दिश जावें सकें छेलां । जेना-तेना आपना कें संभाललां आरो एक गाछी पर चढ़ी गेलां । शिकार में हमेशा एक सें दू होवों अच्छा होय छै । मतरकि

हौ दिन हम्में असकल्ले आवी गेलों छेलियै । पिछुलका कै महीना सें ई चीता लोगों कें परेशान करी रहलों छेलै । गाँव के मवेशी आरनी के सफाया तें करवे करै, आबें ऊ एत्तें दिलेर होय चुकलों छेलै कि राह चलतें आदमियों कें जख्मी करवों शुरु करी देलें छेलै । तीन जख्मी तें ऊ समय अस्पताल में पड़लों-पड़लों ओकरा कोसबो करी रहलों छेलै । गाँववाला कलक्टर कें रिपोर्ट छेलैं छेलै आरो हमरा ऊ चीता कें खतम करै के हुकुम मिललों छेलै । हम्में आरो हमरों साथी दिनेश बाबा दोनों चली पड़लां ।

''गरमी रों दिन छेलै । एक-दू स्थानियो शिकारी कें साथ लैके बात छेलै, मजकि है नै हुएँ पारलै । ऊ गाँव-शहर सें चालीस मील दूर छेलै । हमरा सिनी जीप सें तीन बजें रवाना होलियै आरो रास्ता में रुकतें हुएँ पाँच बजें तांय ऊ गाँव में पहुँचलां, जै ठां सें गाड़ी आगू नै जावें सकै छेलै ।

''जीप ग्रामपंचायत कें सुपुर्द करला के बाद हमरा सिनी कें तीन मील तांय पहाड़ी पगडण्डी पर चढ़तें-उतरतें काफी देर लागी गेलै, आरो जबें गाँव में दाखिल होलां, तें सूरज छुपै के तैयारी करी चुकलों छेलै । सफर रों थकान के चिन्ता छोड़ी कें हम्में शिकार के बारे में ढेर सिनी जानकारी लेलियै आरो पहाड़ी कें सुखलों नद्दी के किनारा फैललों जंगल में घुसी गेलियै । गाँववाला हमरा ऊ सब जग्घों दिखलैलकै, जहाँ-जहाँ चीता शिकार करलें छेलै । हम्में नद्दी रों हिस्साओ दिखलियै, जै ठां आगू चट्टान होला के कारणें पानी इकट्ठा होय रहलों छेलै आरो जहाँ शेर, चीता साथें आरो जंगली जानवर जरूरे पानी पीयै लें ऐतें होतै । हमरा सिनी बहुत्ते कोशिश करलियै कि चीता रों पंजा के निशान मिलें, आकि कोय ताजा मारलों, आकि आधों खैलों शिकार मिलें, मजकि ऊ दिन हमरा आरो कुछ ज्यादा मालूम नै हुएँ पारलै आरो हमरा सिनी आपनों काम दूसरों दिन लें छोड़ी कें गाँव लौटी एलियै । दूसरों दिन भोरकवा उगै सें पहिलें हमरा दोनों बन्दूक लेलें जंगल दिश चली पड़लां । ऊ दिन हम्में एक मिन्टो बर्बाद नैं करै

लें चाहे देलियै । कैन्हें कि शिकारी आरो जवारी के बस एक्के दाव बैठै छै । या तें बाजी मात या फेनू हार । एक दाफी हाथ सें शिकार निकली गेलौं, तें फेनू ओकरों कुछुओ भरोसों नै ।

''सूरज के दू बाँस चढ़ी ऐवों तांय हम्में जंगल में भटकत्हैं रहलियै, मतरकि एकरों अन्दाजा जरूरे होय गेलै कि आइन्दा हमरा की करना चाही। चीता कें घेरै वास्तें हम्में चार ठहराव तय करलियै, जे एक दूसरा सें मील या डेढ़ मील सें ज्यादा दूरी पर नै छेलै ।

''गाँववाला कें राजी करी हम्में चार बकरा मंगवैलियै आरो तीने बजें सें ऊ बकरा सिनी कें निश्चित जगहों पर बंधवाय देलियै । हमरों योजना ई छेलै कि दू जग्घा पर दू आदमी गाछी पर बैठाय देलों जाय, ताकि वैं बकरा पर निगाह रखें । जैन्हैं कें चीता बकरा पर हमला करै, ऊ सिनी हो हल्ला करी कें चीता कें भगाय दै आरो मौका पैत्हैं शिकारी वै ठां पहुँची जाय, फेनू चीता के लौटला पर शिकार करी लै ।

''चीता रों लौटवों निश्चित छेलै, कैन्हें कि वैं आपनों शिकार करलों जानवर कें बादे में खाय छै । बाकी दू जग्घों वास्तें ई योजना बनैलियै कि रस्सी के मचान बनाय कें हम्में बैठौं आरो जों चीता आवी जाय छै, तें शिकार करी लौं ।

''अगला दिन, हठाते दिल में ई चाहत उभरलै कि चलों हम्में असकल्ले कैन्हें नी ऊ चीता के शिकार करियै । मतरकि मजबूरी ई छेलै कि दिनेश बाबा साथें छेलै । तहियो हम्में हुनका हेनों जग्घों में बैठाय देलियै, जैठां चीता के आवै के एकदम्में सें कम उम्मीद छेलै । एतने नै, हम्में चार जग्घों पर दू-तीन चक्करों लगैलियै कि चीता बकरा तांय पहुँचलै आकि नै, मतरकि सूरज डूबै तांय ऊ नै ऐलै । आखिर में हमरा सिनी दू रात जंगले में गुजारै के योजना बनैलियै । रात भरी जागवों जरूरी छेलै, यै लेली हम्में कुछ बिस्कुट खाय कें आरो गरम-गरम चाय्ये पीवी कें संतोष करी लेलां । हौले-हौले सन्नाटा फैली गेलै । रात के काफिला आहिस्ता-आहिस्ता आगू बढ़ें लागलै आरो हमरा हेनों महसूस हुएँ लागलैं कि जेना रातो चौकन्ना होय गेलों रहें । हम्में

इन्तजार करतें रहलियै, मतरकि आधो रात तांय चीता हमरों बकरा के नगीच नै ऐलै ।

''जे दू गाछ पर आरो लोग सिनी बैठलों छेलै, वहाँ चीता चक्कर काटी चुकलों छेलै आरो बकरा तक पहुँचै सें पहिलें भगाय देलों गेलों छेलै । ठीक आधों रात के वक्त चीता हमरों दिश बढ़लै आरो बकरा पर हमला करी देलकै । ऊ रस्सी तोड़ी कें ओकरा मुँह में लेन्हैं भागी जाय के कोशिश करें लागलै । ठीक वही वक्ती हम्में चोरबत्ती के रोशनी में निशाना लगाय देलियै । दहाड़ सुनाय पड़लों छेलै । हमरा दोसरों फायर करै के मौकाहै नैं मिललै ।

''एकदम भोरे भोर सब घटनास्थल पर पहुँची गेलै । गाँव में नै जानौं केना खबर फैली गेलों छेलै कि हम्में चीता रों लपेट में आवी गेलों छियै । आरो खुब्बे जख्मी होय गेलों छियै । पचासो लोग हमरा देखै लें दौड़ी पड़लै । दिनेश बाबा हमरों मुँहों में होमियोपैथी वाला दू बूंदे छेलैं छेलै आरो छोटों-मोटों जख्मों पर पट्टियो बांधी छेलैं छेलै । तबें हम्में अगला मुहिम वास्तें तैयार होय गेलों छेलियै ।

''गाँववाला कें वहीं ठहराय लेलें छेलियै । सबसें पहिलें हम्में आपनों बन्दूक संभालियै । चोरबत्ती के शीशा टूटी कें बिखरी गेलों छेलै, मजकि बन्दूक सही-सलामत छेलै । बकरा मरलों पड़लों छेलै । चीता रों निशान बताय रहलों छेलै कि गोली लगत्हैं ऊ जमीन पर गिरलों छेलै । जोंन जग्घा पर ऊ गिरलों छेलै, वैठां खून रों धब्बा छेलै । एकरों मतलब ई छेलै कि हमरों गोली ओकरा लागलों छेलै जरूरे, मतरकि है नै कहलों जावें सकें कि कत्तें जख्मी होलों छेलै । जे भी हुएँ, आबें ओकरा खोजी निकालना बहुत्ते जरूरी छेलै । कैन्हें कि जख्मी जानवर कोय्यो जानवर के तुलना में ज्यादा खतरनाक साबित होय छै । फेनू ऊ तें जंगली चीता छेलै, जे आय नै कल गाँव वाला सें जरूरे बदला लेतियै ।''

''बीबी जी सॉफ्टी'' कि तखनिये भोलू अन्दर ऐतें बोललै ।

''लान, लान, आहा !'' ब्रेशा सॉफ्टी खैतें बोललै,

‘‘आबें इन्सपेक्टर साहब के कहानी सुनै में आरो मजा ऐतै ।. ....भोलू, ई बचलों होलों हमरै दै दा । इन्सपेक्टर साहब नै खैतात ।’’

इन्सपेक्टर साहब ठोरों पर जी फेरी कें रही गेलै ।

‘‘हों, इन्सपेक्टर साहब, तबें की होलै ?’’ दानिश सॉफ्टी कें दाँतों सें काटतें इन्सपेक्टर शम्रा दिश देखें लागलै ।

‘‘हम्मू सॉफ्टी खैवै ।’’ इन्सपेक्टर ब्रेशा सें बोललै ।

‘‘आबें तें हम्में दै सें रहलियौं । तोहें पहिले इन्कार करी चुकलों छों ।’’

‘‘तोरा दोनों कें खैतें देखी हमरा अच्छा नै लगी रहलों छौं । ई कोय बात भेलै कि तोरा दोनों सॉफ्टी खा आरो हम्में बैठलों रहौं ।’’

‘‘तोरा बैठै लें के कहलें छौं । तोहें आपनों शिकार के कहानी सुनैतें रहों ।’’

‘‘सुनों, सॉफ्टी दा, पहिलें खाय लौं, तबें सुनैवौं ।’’ इन्सपेक्टरें सॉफ्टी दिश हाथ बढ़ैतें कहलकै ।

‘‘हूँ, हूँ’’ ब्रेशां हाथ पीछू करतें कहलकै, ‘‘जों तोरा खानाहैं छौं, तें आपनों मंगाय ला । हमें भोलू कें बोलाय दै छियौं ।’’

‘‘नै, यही दै दा, हम्में फेनू बाद में मंगवैवौं, तबें सब मिली कें खैवै।

‘‘वादा ।’’

‘‘बिल्कुल वादा ।’’

‘‘दानिश तोहें गवाह रहियों ।’’ ब्रेशां इन्सपेक्टर शर्मा दिश सॉफ्टी बढ़ैतें कहलकै ।

‘‘हों, तें कहानी रों बकिया हिस्सा ?’’ दानिशें इन्सपेक्टरें सें कहलकै ।

‘‘हों, तें हम्में कही रहलों छेलियौं कि जख्मी जानवर आरो खतरनाक होय छै; यही लें हम्में ऊ जख्मी चीता कें छोड़ी देवों मुनासिब नै बुझलियै । पहलें तें हम्में ई पता लगैवों जरूरी बुझलियै कि चीता गेलों छै कोंन दिश आरो कहाँ तांय गेलों छै ? एकरों वास्तें हम्में

लहू आरो ओकरों पंजा रों निशान के खोज करलियै । बकरा सें लगभग दू-तीन फर्लांग के दूरी तक हमरा खून के बूँद सिनी नजर ऐतें रहलै, ओकरों बाद चीता नद्दी में उतरी गेलों छेलै । वहाँसें निकली कें ऊ पहाड़ी के कोय जग्घा में जाय बैठलों छेलै । दू-तीन मील के घेरा रों पहाड़ी के चक्कर मारी हम्में ई अन्दाजा लगैलियै कि चीता पहाड़ी छोड़ी कें कन्हें नै गेलों छै, कैन्हें कि हमरा ओकरों पंजा रों निशान आकि खून रों धब्बा आगू काहूँ ने मिललों छेलै । यही लें ई तय छेलै कि ऊ यहाँ पहाड़ी के कोय झाड़ी में छुपी कें बैठलों छै । ओकरा बाहर निकालै लेली हाँक लगवाना जरूरी छेलै । जख्मी शेर आकि चीता कें ढूढ़ै वास्तें हाथी सें हाँका लगवैवों अच्छा रहै छै । मतरकि हमरों वास्तें ई संभवे नै छेलै । से पैदले हाँका लगाय के खतरा मोल लै लें लागलै । पहाड़ी गाछ पर हम्में नगीचे-नगीच आदमी बैठाय देलियै आरो कही देलियै कि जेन्हें चीता घेरा तोड़ी कें जावें लगै, तें वैं सिनी हो हल्ला करी कें ओकरा हमरों दिश लौटै लें मजबूर करी दै ।

‘‘दिनेश बाबा पहाड़ी के ऊपर पगडण्डी के सहारा सें चढ़ी गेलै, जैठां सें डेढ़ सौ गज के दूरी तांय हुनी चारो तरफ देखें सकें छेलै । ऊ वक्ती हम्में गाछी पर नै चढ़ें सकै छेलियै, यही लें हमरा हाँका वालाहै साथें रहै लें पड़लै। आधों वक्त हम्में चाँदे नाँखी दायरा बनाय कें पहाड़ी कें घेरी लेलियै, शोर करतें, मोटाश के गोली छोड़तें, झाड़ी सिनी कें पीटे लागलियै । हमरा सिनी पहाड़ी के एकदम पीछू सें ऊपर चढ़वों शुरु करलें छेलियै आरो आधों सें अधिक पहाड़ी पार करी चुकलों छेलियै ।

‘‘हाँका में जंगली मुर्ग, तीतर, खरगोश आरनी निकली-निकली कें भागना शुरु करलकै, मजकि नुकैलों होलों चीता कहूँ नै दिखाय पड़लै । एक लकड़बग्घों मिललै, जेकरा देखत्हैं दिनेश बाबा गोली चलाय कें मारी देलके ।

‘‘पहाड़ी के मुन्हां पर पहुँची कें हमरा सिनी थोड़ों सुस्तावै लें बैठी गेलियै । यहाँ सें देखला पर अन्दाजा होलै कि पहाड़ी के दायाँ

दिश ढलान, नदी कें पार करी दूसरों दिश घन्नों जंगल सें जाय मिललों छेलै । जों चीता नद्दी पार करी एक दाफी ऊ घन्नों जंगल में जाय घुसलै, तें हमरों सब करलों करैलों चौपट होय जैतै । हम्में मन-मन सोचलें छेलियै ।

''हम्में महसूस करी रहलों छेलियै कि चीता यै ठां में हाँका तोड़ी कें निकलै के कोशिश जरूरे करतै आरो हमरों कोशिश ई छेलै कि घेरी-घारी कें खुल्ला मैदान में दिनेश बाबा दिश करियै, जै सें कि ओकरा आसानी सें निशाना पर लेलों जावें सकें । फेनू, नै जानौं की सोची कें हम्में आपनों पोजीशन बदली लेलियै आरो पहाड़ी के दायाँ दिश वाला टोली के साथ होय गेलियै—जन्नें ऊ जंगल पड़ै छेलै ।

''हम्में फेनू तेजी सें हाँका शुरु करी देलियै । सौंसे जंगल हो-हो आरो पटाखा के आवाज सें गूंजी उठलै । कि हठाते पहाड़ी रों आयाँ दिश, गाछी पर चढ़लों आदमी कपड़ा हिलाय-हिलाय कें खबर देलकै कि चीता आपनों जग्घा सें उठी कें रवाना होय चललों छै । तबें की छेलै, हम्में तुरत होशियार होय गेलियै । बायाँ तरफ यहाँ-वहाँ सें चीता कें भगावै रों आवाज आवें लागलों छेलै । चीता रुकतें, थमतें आरो टोह लेतें हौले-हौले आगू बढ़ी रहलों छेलै । जहाँ भी रुकै के कोशिश करै, गाछी पर चढ़लों लोग ओकरा भगाय दै । आहिस्ता-आहिस्ता ऊ पहाड़ी के नीचें दिनेश बाबा दिश बढ़ना शुरु करलकै ।

''जबें चीता दिनेश बाबा के गाछी सें दू सौ गज दूरी तांय पहुँची चुकलै आरो वहाँ उठलों होलों एक चट्टान के ओट में ठाड़ों होय कें ई अन्दाजा लगाय के कोशिश करी रहलों छेलै कि कन्नें जॉव ? कि तभिये वैं देखत्हैं-देखत्हैं बिजली के गति सें छलांग लगाय देलकै आरो ऊ दोड़ें लगालै । ओकरों रुख धन्नों जंगल दिश छेलै । ई सब एत्तें तेजी सें होलै कि दिनेश बाबा कें गोली चलावें के मौकाहै नै मिललै । हाँका के कारण पहिलें ऊ विपरीत दिशा दिश जाय रहलों छेलै । मतरकि आबें ऊ जंगल लें दौड़ी रहलों छेलै । एक तरह सें बिजली के तेजी सें हमरों दिश आवी रहलों छेलै । खुशकिस्मती सें हौ

तरफ चढ़ाय छेलै, यै लेली संभलै के हमरा मौका मिली गेलै । मुश्किल सें डेढ़ मिनट गुजरलों होतै कि हम्में आरो चीता आमना-सामना आवी गेलियै । दोनों के दूरी बस लगभग दस गज रहलों होतै ।

''चीता रुकी गेलै आरो ओकरों चमकतें, आगिन बरसैतें आँख हमरै पर टिकी गेलै । वै चाहै छेलै कि हम्में ओकरों रास्ता सें हटी जाँव आरो हम्में ई इन्तजारी में छेलियै कि चीता जो कन्नी काटी कें निकलें, तें गोली चलावौं । मतरकि हमरा दोनों के ई ख्वाइश पूरा नै हुएँ पारलै । चीता एक दाफी गुर्रैलै आरो वैं हमरों ऊपर छलांग लगाय देलकै । हम्में तें पहिलें सें तैयार छेलियै । ओकरों छलांग लगैथैं हम्में लबली दबाय देलियै । गोली ओकरों पीठी में लागलै आरो ऊ गिरी पड़लै । तभियो ओकरों छलांग एत्तें-एत्तें लम्बा आरो तेज छेलै कि ऊ हमरे नगीच आवी कें गिरलै । हम्में तेजी सें पाँच-छों गज पीछू हटी गेलियै आरो बन्दूक सीधा करी लेलां ।

''मतरकि एतन्हैं देर काफी छेलै । चीता एक दाफी उछललै आरो ओकरों दोनों अगुलका पंजा हमरों देह पर जमी गेलै । आगिन के एक लहर यहाँ सें लै कें वहाँ तांय दौड़ी गेलै । हमरा मुर्छा रं हुएँ लागलै । मतरकि है के नै जानै छै कि जिन्दगी केकरा नै प्यारों होय छै । जान बचावै के फिकिर नें हमरों होश दुरुस्त करी राखलें छेलै आरो हम्में ओकरों खुल्ला जबड़ा में, जे हमरों गर्दन दिश बढत्रे रहलों छेलै, बन्दूक के कुन्दा ठूँसें लागलियै । मतरकि वहू पीछू हटै आकि पंजा छुड़ाय के बदला बन्दूक के कुन्दा मुँह में दबाय कें चबावें लागलै । एकरा सें ई होले कि ओकरों पंजा हमरों बदन पर ढीला पडें लागलै । एकरा अच्छा मौका समझी कें हम्में आपनों पूरा कुव्त सें ओकरा पीछू धकेली देलियै ।

''ऊ पीछू गिरलै आरो बन्दूको ओकरों मुँहों सें छूटी गेलै । हम्में जल्दी सें बन्दूक संभालियै, मतरकि एतन्हैं देरी में चीता फेनू छलांग लगाय लें आपनों देह समेटें लागलों छेलै । हम्में बिना निशाना लेले लगली दबाय देलियै । एकरा संयोग कहों कि गोली ओकरों

खोपड़ी तोड़तें हुएँ निकली गेलै । चीता दू-तीन फीट जमीन सें उछललै, फेनू वहीं ठां ढेर होय गेलै । गोली के आवाज पर दिनेश बाबा साथें आरो लोग सिनी गाछी पर सें उतरी कें वही दिश दौड़ी पड़लै । ऊ वक्ती हमरा एक दाफी फेनू मुर्छा आवें लागलों छेलै ।''

''वाह, वाह, यानी तहूँ चीता के शिकार करी चुकलों छौ ?'' दानिशें इन्सपेक्टर शर्मा रों तारिफ करतें कहलकै ।

''मतरकि हमरा तें विश्वासे नै होय छौं ।'' ब्रेशा बोललै ।

''कोंन बातों पर ?'' इन्सपेक्टरें चौकी कें पूछलकै ।

''यही कि शिकार के ई घटना तोरों साथ गुजरलों छौं । हमरा तें यही बुझावै छै कि तोहें कहीं कोय घटना पढ़लें होभौ, जेकरहै तोहें हमरा सिनी कें बताय देलौ ।''

''हम्में तोरा सें उलझै लें नै चाहै छी आरो नै तें आपनों बात के सच्चाई में कुछुवो कहै लें ही चाहै छी । मतरकि एतना जरूरे कहै लें चाहभौं कि दिनेश बाबा अभियो भागलपुरे में रही रहलों छै, पाँच सें लै कें सात बजे शाम तक चित्रशालाहे में बैठलों रहै छै, तोहें जाय कें पूछी लिएँ पारै छों ।''

''अरे भाय, कोंन बातों लें पूछा-पूछी के बात उठी रहलों छै'' कि तखनिये फैसल आदर ऐतें हुएँ बोललै ।

''बात ई छेके कि इन्सपेक्टर साहब चीता रों शिकार के एक खिस्सा सुनाय रहलों छेलै । कहै के अन्दाज तें बढ़ियां छेलै, मजकि हौ खिस्सा कें हिनी आपना सें जोड़ी कें बताय रहलों छै, दिक्कत यही छै ।'' ब्रेशा बोली पड़लै ।

''हम्में समझी गेलियै । ऊ घटना सच छेकै । इन्सपेक्टर साहब बेशक चीता के शिकार करी चुकलों छै, ब्रेशा, तोहें हिनका बहुत तंग करै छों ।''

''देखौ नी, हम्में सॉफ्टियो खिलैनें छियै, तभियो हमरा तंग करै छै ।''

''सॉफ्टी खैला के बादो तंग करी रहलो छै । चू, चू, गलत बात

छेकै ।''

''अभी बाकी छै । हिन्ही आपन्हौं खेलै छै, मजकि है वादा रों साथें कि बादाहौ में हिनी सॉफ्टी खिलैतै ।''

''हम्में वादा सें कहाँ हटी रहलों छियै ।''इन्सपेक्टर शर्मा मुस्कैतें हुएँ बोलले ।

''तबें तें ठीक छै ।'' ब्रेशो मुस्कैतें बोललै ।

''हों तें की योजना बनलै । शिकार पर कबें चलना छै ।'' इन्सपेक्टरें फैसल सें पूछलकै ।

''आबें शिकार के योजना खत्म करी छेलैं छियै । वकरम विश्वास में आवी गेलों छै, यै लें पच्छिम दिश सें जंगल में दाखिल होय के मसला हल होय जैतै । हम्में यै लेली शिकार के योजना बनाय रहलों छेलियै ताकि वही बहाना पच्छिम दिश सें जंगल में दाखिल हुएँ सकौं । वकरम नें वादा करलें छै कि वैं हमरा हिफाजत में ऊ शीशम गाछी तांय लै जैतै, जैकरों ठाहुर सें रस्सी लटकलों होलों छै ।''

''की, पश्चिम दिशा सें लै जैतै ?'' दानिशें पूछलकै ।

''नै, पच्छिम के बीच सें होय कें अन्दर जाय के इजाजत तें वकरमो कें नै छै । पच्छिम-उत्तर के किनारा सें पूरब होय कें वैं हमरा अन्दर लै जैतै । ऊ गाछ के आगू पच्छिम तरफें घन्नों जंगल छै आरो हमरों ख्याल में वही तहखानो छेकै, कैन्हेंकि मालगाड़ी लूटला के बाद माल वहीं लै जैलों जाय छै, आरो केकरौ ऊ दिश जाय के इजाजत नै छै।''

''तें, हौ गाछ तक जाय कें की करवै ? फेनू गाछ तांय जैवों, आपना कें खतरा में डाले कें बरोबर होतै ।''

''ओकरों बाद के खाका हमरों दिमागों में छै । हम्में जंगल सें लौटै वक्ती ओकरा रूप छेलैं छियै । वकरम सें यहू मालूम होलों छै कि ऊ गाछ के दक्खिन दिशा, लगभग एक मील के दूरी पर, विभाग रों डाकबंगला छै, जहाँ वनविभाग के अधिकारी ज्यादातर मौजूद रहै छै ।''

''वनविभाग के अधिकारी सें की लेना-देना छै ?'' इन्सपेक्टर

शर्मा पूछलकै ।

''हम्में ओकरौ चेक करै लें चाहै छियै, कैन्हेकि जंगल में होय रहलों घटना सिनी के बारे में ओकरों जानकारी जरूरे होतै । एक मील के दूरी कोय खास बात नै होलै ।

''हों, ई तें छै, मजकि तोरों दिमाग में कोंन खाका छौं, जेकरा पर अमल करवौ ।'' दानिश नें चिन्ताग्रस्त आवाज में पूछलकै ।

''हम्में डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, डी. आई. जी आरो एस. डी. ओ. लुग भी एक घण्टा रों बाद जैवै; हुनका सिनी सें दू दर्जन हथियार बन्द पुलिसो माँगवै । ऊ सब कें तोहें आरो इन्सपेक्टर साहब आपनों निगरानी में लै कें जंगल के भीतर जैवौ । वकरम पच्छिम तरफों के रास्ता कें दिखैतौं । हम्में डी. एम आरो एस. डी. ओ. साथें पूरब तरफों सें अन्दर जैवै आरो शीशम गाछ तांय पहुँचै के कोशिश करवै । हमरा सिनी हथियार सें लैस होवै । दू-चार पुलिस के नौजवान हमरो साथ होतै ।''

''मजकि जंगल रों सरदार के आदमी तोरा शीशम गाछ के आगू बढ़ै लें नै देथौं ।''

''हमरों दिमाग में जे खाका छै, वही पर अमल करवै, यही लें सच्चाई कल्हे तोरा सिनी कें मालूम होतौं ।''

''कल कोंन वक्ती यहाँ सें रवानगी होतै ।'' ब्रेशां पूछलकै ।

''भोरे आठ बजें, ताकि दस बजें तांय हमरा सिनी हमला बोलें सकभौं ।''

''डी. एम जाय लेली मानी जैत्हौं ।''

''हों, अभी जंगल सें लौटला रों बाद हम्में डी. एम कें फोन करलें छेलियै, हुनकों कहलै पर हम्में एस. डी. ओ, आरो डी. आई. जी कें हुनकों बंगला पर पहुँचै लें सूचना दै छेलैं छियै । डी. आई. जियो हर तरीका सें मदद वास्तें तैयार छै ।''

''अभी तोरा कोंन वक्ती जाना छै ?''

''सात बजें ।''

“अरे सवा छौं तें बजी चललै । तोहें जल्दी-जल्दी मुँह-हाथ धोय ला ।”

“हम्में चलै छियौं ।” इन्सपेक्टर शर्मा आरो दानिश एक्के साथ बोललै । फेनू दोनों सोफा सें उठी ठाड़ों भेलै ।

“अच्छा भोरे मुलाकात होतै, सात साढ़े सात बजे तांय यहाँ आवी जा ।” फैसल नें ऊ दानों सें हाथ मिलैतें कहलकै ।

अगला सुबह हंगामा भरलों छेलै । फैसल एकदम भोरे-भोर पाँच बजें उठी गेलों छेलै आरो तैयारी में लगी गेलों छेलै । ब्रेशा ठीक सवा छौं बजें ओकरों यहाँ पहुँचली छेलै । ठीक सात बजें पुलिस रों अट्ठाइस जवानो राइफल लेलें वहाँ आवी गेलै । कुछ के पास तें मशीनगनो छेलै । सात बजी कें दस मिनिट पर दानिश ऐलै आरो इन्सपेक्टर शर्मा सात बजी कें पैंतीस पर पहुँचलै ।

“तें हुजूर इखनी तशरीफ लानी रहलों छौंत ।” ब्रेशां इन्सपेक्टर शर्मा कें आड़े हाथो लेतें कहलकै ।

“ऊ, जरा आँख खुलै में देर होय गेलै ।”

“आँख खोली कें सुतना छेलौं, ताकि देर नै हुएँ ।”

“ब्रेशा, ई वक्ती तोहें इन्सपेक्टर साहब रों मूड मत खराब करों” फैसल ने ब्रेशा दिश होतें कहलकै, “तोहें सब्भे लें चाय बनावों, मजकि जल्दी, कैन्हें कि समय एकदम कम छै ।”

पौने आठ बजें डी. एम शशिभूषण सिंह खड़गाहा आरो एस. डी. ओ उमेश राय भी आवी गेलै ।

तबें फैसल सब्भे लोगों सें कहलकै, “इन्सपेक्टर साहब आरो दानिश पुलिस कें कमाण्ड करतै । हिनका सिनी जंगल रों पच्छिम हिस्सा सें भीतर दाखिल होतै । इन्सपेक्टर साहब, कल हमरा सिनी जै ठां वकरम सें मिललों छेलियै, आय्यों वहीं ठां वकरम तोरा सिनी के इन्तजार करी रहलों होन्हौं । तोरा सिनी खामोशी साथें ओकरों साथ होय लियौ आरो जहाँ तांय संभव हुऔं, गोली नै चलैय्यों । हम्में खून खराबा नै चाहे छी । होन्हौं कें दुनियाँ में युद्ध, धर्म, जाति, राजनीति

कें लै कें एतन्हें खून खराबी होय चुकलों छै कि इतिहास के पन्ना-पन्ना लहू सें लथपथ छै ।

''बिना गोली चलैनें जो अपराधी गिरफ्तार होय कें काबू में आवी जाय छै, तें एकरा सें बढ़िया की हुएँ पारें । होना कें मजबूरी के हालत में गोली चलैवो उचित छै । हमरा सिनी सें पहिलें तोरा सिनी ऊ रहस्यमय ठिकानों पर पहुँची जैवौ, तें हमरा सिनी के इन्तजार करियों । तहखाना रों पता लगाना छै । एकरों लें सबसें पहिलें अन्दर हम्में जैवै । कैन्हें कि सब्भे टा कार्यवाही हम्में आपनों जिम्मेदारी पर करी रहलों छियै । तोरा सिनी के जान कें, रिस्क के तौर पर, खतरा में नै डालें लें चाहै छियौं ।''

''मजकि तोरों जान तें हमरे लेली नै, देश आरो राष्ट्रो लेली होने कीमती छै ।'' एस. डी. ओ उमेश राय नें फैसल कें समझैलकै ।

''धन्यवाद, ई सब हम्मू समझी रहलों छियै, मजकि इखनी जे कुछ हम्में कहलें छियै, वही पर अमल होना चाही । दानिश, ई ला, ई रिवाल्वर तोहीं रखों । आबें हमरा सिनी चलौं ।''

''जरूर ।'' आरो सब्भे उठी गेलै । इन्सपेक्टर शर्मा आरो दानिश दू दर्जन पुलिस साथें दू जीपों पर सवार होय पहिलें निकललै । एक पर डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट शशिभूषण खड़गाहा आरो एस. डी. ओ. उमेश सवार सवार होलै । वही पर पुलिस रों दो चार जवानो चढ़लै, जेकरा कमाण्डो कहलों जाय छै । है सिनी डी. एम आरो एस. डी. ओ. साथें ऐलें छेलै ।

फैसल नें इस्कूटर सें जाय के फैसला करलें छेलै, से ऊ इस्कूटर दिश बढ़लों छेलै कि डी. आई. जी. अवधेश सिंह वहाँ पहुँची गेलै ।

''तोहें ?'' फैसल नें हैरत से पूछलकै । डी. एम. आरो एस. डी. ओ. जीप सें उतरी ऐलै । कमाण्डो पहिलें जीप सें उतरी कें डी. आई. जी. कें सलामी दिएँ लागलों छेलै ।

''तोरों कल के बातों सें हम्में बेहद चिन्तित होय गेलों छियै ।

आपनों स्वाभाविक बेचैनी कें नै दबाबें पारलियै, यही लें हम्मू तोरों मुहिम में शामिल होय लें आवी गेलां ।''

''मजकि तोहें ?''

''तें तोहें की समझै छौ, हम्में बूढ़ों होय गेलों छियै'' डी. आई. जी. अवधेश सिंह कहकहा लगैतें कहलकै, ''अभी हमरा में बहुत ताकत छै । हम्में अय्यों शेर रों शिकार पर जावें सकै छी । यै लेली हमरों फिकिर करै के जरूरत नै छै । हम्में तोरों सिनी के साथें चली रहलों छी । फेनू तोरों कार गर्दियो देखै लें चाहे छी । हिन्नें तोहें कै एक ठो मार्के के काम करलें छौ । पिछुलका गिद्धवाला केस तोहीं हल करलें छौ । अखबारों में एकरों खुब्बे चर्चा रहलै । आबें जंगल में बैगन तोड़ी कें सामान लूटै के केस हम्में आपनों आँखीं सें देखै लें चाहै छियै कि केना ई हल करलों जाय छै । नै जानौं, ऊ सब के लोग छेकै जे समाज कें खोखला आरो सरकार कें नुकसान पहुँचाय पर तुललों होलों छै । पिछला तीन-चार साल से स्थानीय प्रशासन बड़ी छानबीन करी रहलों छै कि आखिर मालगाड़ी सें बैगन के बैगन सामान कहाँ आरो केना गायब होय जाय छै । रेलवे विभागो हरजाना भरतें-भरतें तंग आवी गेलों छै । जों ई मुहिम तोहें जीती लै छौ, तें ई बड़का कारनामा होतै ।''

''यै में कारनामा के कोय बात नै छै; ई तें हमरों फर्ज छेकै कि समाज रों लुटेरा खूनी आरो बुरा आदमी कें खात्मा करौं । आवों एक कप चाय तें पीवी ला । पुलिस पार्टी आगू जाय चुकलों छै । हमरौ जल्दिये पहुँचना छै ।''

''नै अभी चाय नै । लौटी कें चाय के दौर चलतै । होन्हौं कें घरों में चाय पीवियै कें चललों छी; आवों, तोहें हमरों जीपों पर आवी जा । इस्कूटर छोड़ी दौ ।''

फैसल डी. आई. जी. के जीपों पर बैठी गेलै आरो रवाना होय गेलै ।

जंगल सें कुछ दूरहे फैसल नें जीप कें रोकवाय देलकै आरो

सब पैदले आगू बढ़लै । जबें पूरब दिशां सें शीशम गाछी ओर हुनका हिसनी बढ़ी रहलों छेलै, तखनिये दू आदमी रायफल लेलें हुनका सिनी के सामना आवी कें खाड़ों होय गेलै, आरो पूछलकै,'' तोरा सिनी कहाँ जाय रहलों छौ ?''

''शिकार खेलै वास्तें जग्घों तलाशी रहलों छियै । तोहें दोनों के छेकौ ?'' फैसल नें लगले पूछलकै ।

''हम्में वन-विभाग रों आदमी छेकियै । हिन्नें शिकार खेलना मना छै ।''

''हमरों पास शिकार खेलै के परमिट छै ।''

''मजकि है इलाका खतरनाक छै । हम्में तोरा सिनी कें अन्दर नै जावै लें दिएँ पारौं । अन्दर चीता आरो दूसरों-दूसरों जंगली जानवर भरलों पड़लों छै । जों तोहें अन्दर गेलौ तें जान कें जमानत मिलना मुश्किल छै, आरो ई हमरों जिम्मेदारी छेकै कि हम्में अन्दर जाय सें रोकौं ।''

''मतरकि हम्में तें शिकार खेलै के इरादाहै सें ऐलों होलों छियै ।''

''जों शिकर खेलनाहैं छौ, तें जंगल के किनारी-किनारी पंक्षी, मुर्ग आरो खरगोश के शिकार करों ।''

''नै हम्में चीता के शिकार खेलै लें ऐलों छियै । हिन्नें जंगल घन्नों नै छै । मचान बनाय लेली भीतर जाय कें जग्घों देखै लें पड़तै ।

''हम्में तोरा आगू नै जावें देभौं ।'' ई कहत्हैं दोनों नें रायफल तानी लेलकै ।

''तोरा दोनों होश में छौ की नै । ई की बदतमीजी छेकै ?'' डी. आई. जी. अवधेश सिंह गुस्सा सें काँपें लागलै ।

''जनाब, तोहें गोस्सावों नै ।'' फैसल नें डी. आई. जी. कें खामोश रहै के इशारा करलकै ।

''अच्छा डाकबंगला कन्नें छै ?'' फैसल ने पूछलकै ।

''हुन्नें ।'' दोनों ने बायां दिश इशारा करलें छेलै । बस यही

ऊ क्षण छेलै, जबें बिजली के गति सें फैसल नें दोनों के रायफल छीनतें आगू बढ़ी गेलै । फेनू ऊ वहाँ तेजी सें पलटलों छेलै आरों रायफल रों रुख दोनों दिश करी छेलैं छेलै ।

''आपनों हाथ के ऊपर उठावों ।'' फैसल नें गुर्रैतें कहलें छेलै ।

ई सब एत्है तेजी सें होलै कि केकरहौ कुछ समझै में नै ऐलों छेलै । पुलिस रों जवान आरो डी. आई. जी. अवधेश सिंह के अंगरक्षको हैरान रही गेलै ।

''तोरा सिनी ई दोनों कें बांधी लें'' फैसल नें पुलिस के जवान सें कहलकै आरो ई दोनों के तलाशियो लै ला ।

जबें ऊ दोनों रस्सी सें जकड़ी देलों गेलै, तें फैसल दोनों के नगीच ऐलै । आपनों दायां हाथ वै एक रों कनपट्टी लुग लै गेलै आरो अंगूठा सें दबाब डालें लागलै । कुछुवे देरों में ऊ बेहोश होय गेलै । यही हरकत वैं दूसरों आदमियो के साथ करलकै ।

''ई की करलौ तोहें ? ई दोनों वन-विभाग के आदमी छेलै आरो हमरे सब के भलाय लें हमरा सिनी कें रोकी रहलों छेलै ।'' डी. आई. जी. के बोली में झुंझलाहट छेलै ।

''हम्में खाली एतन्हें कहै लें चाहभौं कि ई दोनों आदमी वन-विभाग रों आदमी नै छेलै, बलुक सरदार के आदमी छेकै । अभी तें आगू ई किसिम के कत्तें लोग मिलै वाला छै । हमरा सिनी कें बेहद चौकन्ना रहना चाही ।''

फेनू फैसल नें पुलिस रों जवान सें कहलकै, ''दोनों बेहोश आदमी कें उठावों आरो झाड़ी में डाली दौ, ताकि हिन्नें सें गुजरैवाला के नजर ई दोनों पर नै पड़ें । ई दोनों कें होश में आवै में अभी तीन घण्टा लगतै ।''

आदेश मिलना छेलै कि जवान दोनों कें झाड़ी में डाली कें लौटी ऐलै ।

ठीक शीशम गाछी के नगीच ऊ सब कें तीन आदमी आरो

नजर ऐलै । यहूँ ठां वही सब बात होन्है कें घटलों छेलै आरो फैसल नें होन्है कें दू आदमी कें बेहोश करी, तेसरों आदमी कें अपना कब्जा में लेतें पूछलें छेलै ''तहखाना तक जाय के रास्ता बतावों, नै तें रिवाल्वर के छवो गोली तोरों खोपड़ी में उतारी देभौं ।''

''हम्में कोय तहखाना-वहखाना के नै जानै छियै । हमरा सिनी वन-विभाग के आदमी छेकियै । हमरा सिनी पर ज्यादती करी कें तोहें अच्छा काम नै करी रहलों छौ ।'' ऊ आदमी के आवाज में कटियो टा डॉर नै छेलै।

''ठीक छै, सरदारे के बारे में बतावों ।'' फैसल नें पूछलकै ।

''तोहें केन्हों बात करी रहलों छौ ? सरदार, तहखाना, ई सब पागले के बात हेनों छेकै ।''

''तें ठीक छै, हम्में आपनों पागलपन दिखावै छियौं ।'' एतना कही कें फैसल नें जेबी सें रूमाल निकाललकै आरो ओकरों मुँहों में ठूँसी देलकै, आरो फैनू देसरों जेबी सें एक ठो लम्बा चाकू निकाललकै ।

''ई चाकू देखी रहलों छौ नी । हम्में कहै छियौं कि अभियो मौका छौं—हम्में जे कुछ पूछी रहलों छियौं, बोकरों सीधा-सीधा जबाब दें । होना कें एत्तें हम्में जरूरे जानै छियै कि सरदार ई जंगल में की कुछ करी रहलों छै । मालगाड़ी कें लूटै सें लै कें ओरो दूसरों-दूसरों अपराधो कर्म तक के हमरा पता छै । हमरा यहू पता छै कि शीशम रों गाछ सें ई जे रस्सी लटकी रहलों छै, ओकरा सें खतरा के खबर तहखाना तांय पहुँचैलों जाय छै । आबें बोलों कि तोहें हमरों सवाल के सही-सही जबाब दै छौ कि नै ।''

एतना सब बतैला के बादो ऊ आदमी इन्कार में आपनों मूड़ी हिललकै ।

ठीक यही वक्ती झाड़ी में हरकत होलै । बंधलों आरो बेहोश आदमी कें वांही पर छोड़ी कें ऊ सब आदमी रायफल, रिवाल्वर हाथों में ले लें गाछी के ऑटों में होय गेलै । सबसें आगू वकरम छेलै, ओकरों पीछू इन्सपेक्टर अंजनी शर्मा आरनी झाड़ी सिनी सें निकली कें

सामना आवी गेलै । वैं ऊ तीनों आदमी कें बड़ी आश्चर्य सें देखवो करी रहलों छेलै ।

गाछी के पीछू सें फैसल आरनियो सामना में आबी गेलै । वैं वकरम सें पूछलकै, ''की रहलै ?''

''कुछुवो पता नै चललै । पश्चिम के तरफ सें ई सीध में हमरा सिनी आवी रहलों छियै । तहखाना रों कोय संकेत कन्हौं नै बुझैलै । ई लोग सिनी के छेकै ?''

''यही शीशम गाछी के नीचें मिललों छै ।''

''तबें तें ई खास आदमी छेकै ।'' वकरम नें कहलकै, ई गाछ सें आगू तहखाना तांय जाय वाला रास्ता रों पता यै सिनी कें जरूरे मालूम होतै । यै सिनी सें पूछौ ।''

''यैं कुछुवो बतावै सें इन्कार करी रहलों छै ।''

''तें, यै सिनी कें मारै के जरूरत छै । ई सब गद्दार छेकै, जरो टा रहम करै के जरूरत नै छै ।''

''तोहें ठीक कहै छों वकरम । मतरकि ई सब मारो सें सच्चाई उगलै वाला नै बुझावै छै । फेनू हमरा सिनी के पास समैयो कम छै । अभी तें सब लोग अनजान छै । जों ओकरा सिनी कें एकरों भनक मिली जाय छै कि हमरा सिनी यहाँ तक आवी गेलों छियै, तें ऊ सब झाड़ी सिनी सें निकली कें हमरै सिनी कें चाटी जैथौं । यही सें एकरा हम्में मारी कें खतम नै करवै, मतरकि अधमरुओं जरूरे करी दै छियै, ताकि आपनों घाव के तकलीफ कें बर्दास्त करतें रहें ।'' आरो फैसल ने आपनों वज्रवाला घूसा सें ओकरों बायाँ हाथ के कलाई भसकाय देलकै ।

ऊ आदमी दरदों सें सिसकी भरना शुरु करी देलकै, आरो आपनों फूली गेलों कलाई कें देखें लागलै

कच.....ई दाफी फैसल नें ओकरों अंगूठा कें भसकाय देलकै ।

''अभियो बतावै छौ कि नै ?''

वै फेनू इन्कार में मूड़ी हिलाय देलकै ।

''ठीक छै, नै बतावों ।'' आरो ई कही फैसल नें एक जबरदस्त झापड़ ओकरों कान पर देलकै । लागलै, ओकरों काने उड़ी गेलों रहें । कान सें खून गिरें लागलों छेलै ।

''आबें बतैवौ कि फेनू....।'' फैसल नें पूछलकै ।

''एकरा छोड़ी दौ । तोहें जे कुछुवो करी रहलों छौं, ऊ इन्सानियत के एकदम खिलाफ छै ।'' डी. आई. जी. अवधेश सिंह ने फैसल कें रोकै लें चाहलकै ।

''तोरा बीच-बचाव करै के कोय जरूरत नै छै । हम्में आपनों देश आरो राष्ट्र के हित के हेनों विरोधी साथें रहम करै लें नै चाहै छियै । ई सब इन्सानियत के लायके कहाँ छै । अबकी बार तें हम्में एकरों आँखें फोड़ै लें जाय रहलों छियै ।''

ई कही फैंसल नें जेन्हें आपनों हाथ बढ़ैलकै, ऊ आदमी जोर-जोर सें मूड़ी हिलावें लागलै । तें, फैसल नें आपनों हाथ रोकतें कहलकै, अभियो बतावै छौ कि नै ?'' अबकी दाफी वै हों में मूड़ी हिलैलकै ।

ई देखी वकरम नें ओकरों मूँ में ठूँसलों रूमाल कें निकाली देलकै।

''जल्दी सें बातवों कि तहखाना रों रास्ता कन्नें सें छै ? तोरों माथा पर मौत मँडराय रहलों छौं । हम्में नै चाहै छी कि तोरों मौत हो जाय । सच- सच बतैला पर हम्में तोरों चोट वास्तें दवाय-दारूओ के व्यवस्था करें पारौं।''

''यै लें हमरा साथ लै जाय लें लागथौं, वरना कैन्हौं कें तोरा सिनी वै ठां नैं पहुँचें सकै छौ ।'' ऊ दर्द सें कुरैहतें होलों बोललै । चोट सें ओकरों कनपट्टी फूली कें तुमड़ी होय गेलों छेलै ।

''पहिलें ई बतावों कि ऊ तहखाना के भीतर की छै ?''

''हम्में सिरिफ एक कोठरी में दू दाफी गेलों छियै; वहू में आँखी पर पट्टी बाँधिये कें हमरा वहाँ पहुँचैलों गेलों छेलै । वै ठां दीवारों सें सरदार के आवाज सुनाय पड़ै छै । हमरों काम तें माल कें

गाछी लुग सें तहखाना के रास्ता तांय पहुँचैवों भर छेकै ।''

''जे हुएँ, आबें जल्दी करों । इलाज वास्तें तोरा अस्पतालो पहुँचैना जरूरी छै ।''

ऊ आदमी रास्ता दिखैतें हुएँ सबकें एक झाड़ी तक लानलकै । बाहर सें देखला पर ई झाड़ी एकदम घन्नों छेलै । फेनू ऊ आदमी के हिदायत पर सब्भे आदमी बाहरे रूकी गेलै आरो झाड़ी के ओट में होय गेलै । झाड़ी के नगीच पहुँची कें ऊ आदमी हाँक देलकै, ''गोविन्दा, अय गोविन्दा ।''

वकरम ओकरा एक हाथों सें सहारा छेलैं होलों छेलै आरो आपनों दोसरों हाथों में रायफल लेलें होलों छेलै ।

''के छेकै ?'' गोविन्दा झाड़ी सें बाहर निकलतें बोललै । ओकरों हाथ में मशीनगन छेलै ।

''हम्में वकरम छेकियै । एकरा चीता घेरी लेलें छेलै । बचाव में एकरों कलाई आरो कनपट्टी पर भारी चोट ऐलों छै ।''

''ओहो, ठहरों, हम्में अभी तुरत अन्दर खबर करै छियै ।'' ई कही`गोविन्दा जैन्हैं पलटलै कि वकरम नें रायफल रों कुन्दा गोविन्दा के माथों सें टिकाय देलकै, जेकरों कारण वह कटलों ठारी जकां धरती पर गिरी पड़लै ।

ई देखत्हैं फैसल आरो सब्भे लोग वहाँ एकदम करीब पहुँची गेलै ।

''गोविन्दा कें बाँधी दौ आरो एकरों मुँहों में कपड़ो ठूँसी दौ'' फैसल नें पुलिस के जवानों दिश होतें कहलकै, ''आरो तोरा में तीन आदमीं एकरा अस्पताल पहुँचावों । सदर अस्पताल में डाक्टर हेमन्त सिन्हा सिविल सर्जन छै, हुनका हमरों नाम बतैय्यौ आकि हुनी नहियो रहै, तें कोय बात नै, दूसरे डाक्टरों सें जल्दी-से-जल्दी मेडिकल मदद वास्तें कहियौ । दू आदमी तें एकरा कंधा पर उठाय ला, बाकी एक रास्ता रों निगरानी करतें चलियों । हों, तोरों नाम की छेकों ?'' फैसल नें ऊ घायल आदमी सें पूछलकै ।

''डलियास ।''

''अच्छा आवें एकरा तोरा तीनों लै जा । गाल सें गल्ला तांय फूली गेलों छै ।''

आदेश पावी कें तीन जवान डलियास कें लै कें वै ठां सें निकली गेलै ।

''हम्में झाड़ी में जाय कें पहिलें देखै छियै, फेनू तय करवै कि भीतर तांय केना ढुकलों जाय । होना कें झाड़ी रों फैलाव बहुत्ते ज्यादा छै ।'' ई कही फैसल झाड़ी रों अन्दर घुसी गेलै ।

ऊ एक टा बड़ों रं कोठरी छेलै, जेकरों दीवार लकड़ी सें बनलों होलों छेलै । दायां किनारी पर एक ठो कुर्सी राखलों होलों छेलै आरो दीवार से दूर रायफल सिनी लटकलों होलों छेलै ।

झाड़ी सें बाहर आवी कें वें डी. आई. जी. अवधेश सिंह, डी. एम. शशिभूषण सिंह खड़गाहा, आरो दानिश से कहलकै,'' ई झाड़ी खास तोरों पर बनैलों गेलो छै, मतरकि एकरा बेतरतीव छोड़ी देलों गेलों छै । होना कें भीतर में एक ठो साफ-सुथरा आरो बड़ों रं कोठरी छै । तोरा सिनी भीतर चलों, मतरकि एकदम खामोश रहतें । हमरा तहखाना रों रास्ता तलाशना छै। भीतर ढुकी कें तोरा सिनी एक शब्द नै निकालवौ । संभव छै, ऊ आवाज नीचें तांय पहुँची जाय आरो हम्में ओकरा सावधान नै करै लें चाहे छियै। अभी तांय जेटा सफलता मिललो छै, हौ ऊ सब के बेखबरी के कारणें । यहाँ बेखबरी के फायदा उठाय कें हम्में असल अपराधी कें पकड़ै लें चाहै छियै ।

''ठीक छै ।'' सब्भैं एक्के साथ कहलकै ।

''पुलिस रों जवान आरो कमाण्डर बाहरे पहरा देतै । जों कोय्यों हिन्नें आवें, तें बिना कोय सोच के गोली मारी देलों जाय ।'' फेसल नें कहलकै ।

आरो सब एक्कै साथ झाड़ी में ढुकी गेलै । डी. एम. शशिभूषण सिंह खड़गाहा हैरत सें कुछ बोलै लें जय्ये रहलों छेलै कि फैसल नें ठोरों पर अंगुली राखी कें हुनका चुप्पे रहै के इशारा करलकै । फेनू तहखाना

रों रास्ता तलाशें लागलै ।

पूरा कोठरी ठोकी-बजाय कें देखी लेलों गेलै, मतरकि ओकरा में रास्ता ने मिललै । सब हैरान-परेशान होय कें एक-दूसरा के चेहरा देखवो करी रहलों छेलै ।

कि एकाएक फैसल रों नजर दीवार पर लगलों हैंगर पर ठहरी गेलै । बगल में लकड़ी के दीवार में एकटा हैंगर गड़लों होलों छेलै जे कपड़ा आरनी टाँगै में काम ऐतें होतै । मतरकि है कोठरी आरामगृह तें नै छेलै कि यहाँ कोय कपड़ा टाँगे पारें । फैसल नें एक क्षण में ई सब सोची लेलकै । फेनू हाथ बढ़ाय कें हैंगर खींची लेलकै ।

'खट' रों आवाज के साथें कोठरी रों बीचो-बीच के फर्श हटी गेलै। चार फीट चौड़ा खाली स्थान दिखावें लागलै । दानिश तें गिरतें-गिरतें बचलै, डी. आई. जी अगर ओकरा थामी नै लेलें होतियै ।

फैसल ने निश्चिन्ती के साँस लेलकै । फेनू ऊ आगू बढ़ी कें खाली स्थान में झाँकें लागलै । नीचें जाय वास्तें सीढ़ी बनलों होलों छेलै । वैं तमाम लोगों दिश देखलकै आरो आपनों गोड़ खाली स्थान के सीढ़ी दिश बढ़ाय देलकै । तखनी ओकरों एक हाथों में रिवाल्वर छेलै ।

पाँच सीढ़ी नीचे उतरला रों बाद ऊ जमीनों पर आवी गेलै । आसपास कोय्यों नै छेलै । सामनाहै दस गज के एक लम्बा पतला गल्ली नजर आवी रहलों छेलै । ओकरों आगू शायत कोठरी छेलै । फैसल आगू बढ़ै के बजाय सीढ़ी चढ़ी कें ऊपर आवी गेलै आरो ऊ खाली जग्घों सें आपनों मूड़ी ऊपर करी सब्भे कें आपनों पीछू आवै के इशारा करलकै । एकेक करी कें जबें सब्भे तहखाना में उतरी गेलै, तें वैं फुसफुसैतें हुएॅ कहलकै, ''ई गल्ली सें आगू बढ़ना छै, बस समझों कि मौत रों मुँहों में आवी गेलों छौं । यही लें साव- धान रहै के जरूरत छै । आपनों-आपनों रिवाल्वर सब आपनों हाथों में राखी ला ।''

फैसल हाथों में रिवाल्वर लेलें आगू बढ़लै । ओकरों पीछू सब्भे लोग चौकन्ना होलें आपनों गोड़ बढ़ाय रहलों छेलै ।

गली रों छोर पर एकटा पहलवाननुमा आदमी स्टूल पर बैठलों किताब पढ़ी रहलों छेलै । ओकरों नगीचें रायफल राखलों छेलै । फैसल साथें ओकरों सब्भे लोग एतन्हैं आहिस्ता सें गली में आगू बढ़ी रहलों छेलै कि आदमी के खबरो तांय नै हुएँ पारलै, या तें फेनू ऊ पढ़ै में एत्है लीन छेलै कि ओकरा ऊ सबके आवै के भनक तांय नै हुएँ पारलै । फैसल नें रायफल कें उलटा पकड़ी कें ओकरों माथा पर एत्है जोर सें दै मारलकै कि वैं मूड़ियो नै उठावें सकलकै आरो वही ठां लुढ़की कें नीचे गिरी पड़लै ।

ओकरों रायफल पर कब्जा करला के बाद फैसल नें चारो दिश आँख दौड़लकै । ई तहखाना की छेलै, एक ठो बड़का मकान छेलै, जेकरों चारो दिश कोठरी बनलों होलों छेलै । यै ठां घुटन के कोय एहसासो नै होय रहलों छेलै । कोय रास्ता सें ऑक्सीजन जरूरे पहुँची रहलों छेलै ।

फैसल साथें सब्भे लोगें महसूस करलकै कि एक कोठरी सें कुछ लोगों के बोलै के आवाज आवी रहलों छै । आवाज सुनत्है फैसल ऊ कोठरी दिश बढ़ी गेलै ।

कोठरी भिड़कलों होलों छेलै आरो दरवाजा के भीतर सें आदमी सिनी के आवाज आवी रहलों छेलै ।

''जों तोहें निश्चिन्त छों, तें हमरौ कोय चिन्ता नै छै ।'' एक आवाज सुनाय पड़लै ।

''हम्में कही चुकलों छियौं कि यै में चिन्ता के कोय बाते नै छै । सी. आई. डी वाला हिन्नें आवे नै पारें ।''

ई आवाज शाहिद के छेलै । निश्चिन्त होय लें फैसल नें इन्सपेक्टर शर्मा दिश देखलकै । वैं स्वीकार में मूड़ी हिलाय देलकै ।

''खैर जे हुएँ, यै ठां हमरा सिनी सुरक्षित छियै, हमरा तें तोरों फिकिर होय रहलों छेलै कि हमरों आदमी के गलती सें कहीं तोरा परेशानी नै होय जाँव ।'' पहिलकों वाला आवाजें कहलकै ।

''नै, नै, हमरा पर कहौं सें कोय शंका नै हुएँ पारें, हम्में

क्रिया-करम कथी लें करलें छियै । फेनू ई तें किसिम के मदद छेलै ।''

''ई बात चिन्ता के नै छेकै । सी. आई. डी. वाला सें लहास लानी कें तोहें गलती करलें छेलौ । होना कें आबें ई सब बात जावें दौ । तें, हों मिस्टर अफजल, ई दाफी तोहें कत्तें टाका लै कें ऐलें होलों छौ ।''

''अढ़ाय लाख तें अभी लै ला । बाकी टाका डिलेवरी के वक्ती आकि फेनू एक दिन के बाद चुकाय देभौं ।''

''कोय बात नै, तोरा पर भरोसा छै । हमरों शुरुआती दौर के तोहें ग्राहक छेकौ । लानो टाका, दा ।''

ठीक तखनिये फैसल नें लात मारी कें दरवाजा खोली देलकै आरो बिजली के गति सें ऊ कोठरी के भीतर दाखिल होय गेलै । एक हाथ में रायफल आरो दूसरों हाथ में रिवाल्वर के रूख, कोठरी के लोगों दिश करतें हुएँ वें कहलकै, ''आबें खेल खत्म होय चुकलौ । सी. आई. डी के लोग यहूँ ठां पहुँची चुकलों छै ।''

शाहिद नें आपनों हाथ रिवाल्वर दिश लै जाय लें चहलकै, मतरकि तभिये फैसल के रिवाल्वर सें एक शोला निकललै आरो शाहिद के हाथ तखनिये झूली गेलै ।

''तोरा सिनी हाथ उठैले राखों ।'' ई कहतें फैसल दरवाजा के सामना सें हटी गेलै । ओकरों हटत्हैं बाकी आरो लोग कोठरी में घुसी ऐलै ।

''है हिन्नें, हवाई शर्ट पिन्हलें घायल हाथ वाला शाहिद छेकै आरो ई दूसरों अफजल छेकै । आरो सरदार....... ऊ नकाब में छै । पहिलें ई सिनी के हाथों में हथकड़ी डाली दौ, फेनू सरदार के चेहरो देखी लेवै ।''

फैसल के एतना कहत्है सब, ऊ तीनों लोग दिश बढ़लै । कोठरी में बस वहा तीनों छेलै । वहाँ दस कुर्सी सलीका सें राखलों गेलों छेलै । वैमें एक रिवॉल्विंग कुर्सी सबसें अलग-थलग छेलै । जे पर नकाबपोश बैठलों होलों छेलै । हथियार सें लैस एत्तें सब लोग कोठरी

में आवी गेलों छेलै कि ऊ तीनों कें हरकत करै के मौकाहै नै मिललै ।

ऊ तीनों के हाथ पीठी दिश लानी कें बांधी देलों गेलै । आबें फैसल ऊ नकाबपोश दिश बढ़लै आरो एक झटकाहै सें ओकरों चेहरा सें नकाब जेन्हैं हटलकै, तें एस. डी. ओ उमेश राय के मुँहों सें हाठाते चीख निकली पड़लै, ''जगदीश प्रसाद ।''

''कोंन जगदीश प्रसाद ?'' फैसल नें आश्चर्य सें पूछलकै ।

''वन-विभाग अधिकारी ।''

''ओहो ।'' फैसल नें ओकरों चेहरा उठैतें हुएँ कहलकै, ''तें सरदार हिनिये छेकात, आरो हिनिये पिछुलका छः सालों में करोड़ो के डकैती करी चुकलों छोंत !''

''मतरकि एकरों दूसरों साथी सिनी नजर नै आवी रहलों छै । डी. एम. शशिभूषण सिंह खड़गाहां पूछलकै ।

''जे लोगों कें हमरा सिनी बेहोश करलें होलों छियै, वही सब तें एकरों आदमी छेलै । एक खास आदमी शेरघाटी थाना के दरोगा शाहिद छेकै । आरो कुछ लोग होतै । जबें सरगना हाथ लागी गेलों छै, तें ऐकरों वकिया साथी केना बचें पारें ।''

वहाँ, वही कोठरी सें मिलतें एक आरो कोठरी छेलै । जबें फैसल वैं में दाखिल होलै, तें सामनाहैं में ओकरा खाली जग्घों दिखैलै । एक खुफिया रास्ताहौ ऊ कोठरी सें कहीं आरो गेलों छेलै । फैसल इन्सपेक्टर आरनी कें हिदायत दिएँ लागलै, ''तोहें ई तहखाना के हर कोठरी के जाँच-पड़ताल करों । सामान के साथे-साथ कागजो देखते जाना छै । ऊपर सें पुलिस के कुछ जवानों कें यहाँ लै आनों । आरो ई तीनों कें कमाण्डो के हवाला करी दौ, साथे-साथ यहू कही दौ कि यै सिनी पर कड़ा निगरानी राखै के जरूरत छै । आबें हम्में ई खुफिया रास्ता सें आगू बढ़ी रहलों छियौं । देखै छियै कि एकरो अन्त आखिर कहाँ होय छै ।''

फेनू ऊ खुफिया रास्ता में उतरी गेलै । ई रास्ता टेढ़ों-मेढ़ों

छेलै । ओकरा करीब-करीब दस मिनट तांय रास्ता पर चलै लें पड़लै आरो जबें ऊ एकरा सें बाहर ऐलै, तें एकटा सजलों-सजैलो कोठरी में छेलै । जायजा लेला पर ओकरा पता चललै—ऊ कोठरी वन विभाग के अधिकारी के शयनकक्ष छेलै ।

फैसल नें खिड़की खोललकै, बाहर दिश झाँकलकै आरो ओकरा अन्दाजा लगैतें देर नै लागलै कि ऊ तखनी डाकबंगला में छेलै ।

फैसल तहखाना में जबें वापिसे पहुँचलै तें वहाँ आरो लोग ओकरों इन्तजार करी रहलों छेलै । वैं ऊ रास्ता के बारे में बताय कें इन्सपेक्टर सें पूछलकै, ''यहाँ कुछु हाथ लगलौं ?''

''बहुत कुछ चोरी आरो लूट के माल भरलों पड़लों छै । कुछ फाइलो मिललों छै । एक में ऊ सब आदमी के नाम आरो पता दर्ज छै । आरो हों, ऊ पहलवाननुमा आदमी कें होश आवी गेलों छै, ऊ गवाहियो दै वास्तें तैयार छै । हीरा माँझी आरो दूसरों-दूसरों सजा पावै वाला के बारे में पहलवानें बतैलें छै कि जे लोगों के मूड़ी काटी ले लों जाय छेलै, हुनकों धड़ पानी में बहाय देलों जाय छै, या फेनू जमीन में गाड़ी देलों जाय छै । एक कुँआ छै । सजा के तौर पर अधिकांश कें मारी कें वही कुँआ में डाली देलों जाय छै । यहीं कहीं ई जंगल में ऊ कुँआ छै ।'' इन्सपेक्टर शर्मा नें विस्तार सें सब बतैलकै ।

''तें, एक बातों के आरो जानकारी दा कि यै ठां सें माल कोंन रास्ता सें बाहर लै जेलों जाय छै ?'' फैसल नें पहलवान सें पूछलकै ।

''खुफिया रास्ता सें, जे आधों किलो मीटर के दूरी पर एक ठो मन्दिर के नगीच निकलै छै । वहीं ठां गोदाम बनलों होलों छै । हमरा ऊ सब दिखलाय में कोय आपत्ति नै छै ।''

''चलों, यहू मालूम होय गेलै । आबें हमरों काम खतम होलै । बकिया कार्यवाही आबें इन्सपेक्टर साहब तोहें खुद्दे करों ।'' फैसल आगू बढ़तें हुएँ बोललै ।

''ई सब अजीब आरो सपना नाँखी बुझावै छै ।'' डी. आई. जी. अवधेश सिंह बोललै ।

“हल करै में कहीं कोय रुकावट नै ऐलै, यही लें ई अजीब रं बुझावै छौं ।”

“पिछला के सालों सें हमरा सिनी मालगाड़ी कें तोड़लों जाय वाला घटना सें परेशान छेलियै । आय ओकरों जेना अंत होय गेलै ।” एस. डी. ओ. उमेश राय बोली पड़लै ।

“तोहें जे रं से एत्तें बड़ों अपराध के खेल कें अंत दै छेलैं छौ ओकरा सें तोहें, प्रशासन, समाज, देश, सब्भे के बड़ा भारी उपकार करलें छों । आभारी छियौं ।” डी. एम. शशिभूषण सिंह खड़गाहा फैसल सें हाथ मिलैतें कहलकै ।

“ई केस में तोरा सिनी के बहुत मदद मिललों छै, एकरों वास्तें हम्मूं तोरा सिनी के बड़ी आभारी छी । फैसल नें भी सब्भे के शुक्रिया अदा करलकै । आरो तबें दानिश सें बोललै, “चलो भी, बड्डी देर होय गेलै । ब्रेशा इन्तजारी में होतै आरो चिन्ताहौ करतें होतै ।” एतना कही दोनों वहाँ सें वापिस होय गेलै ।

फैसल के जीप तेजी सें जंगल के बीच सें निकली रहलों छेलै आरो ओकरौ सें ज्यादा तेज ओकरों दिमाग चली रहलों छेलै । खास करी कें जंगल रों सरदार के बारे में घुरी-घुरी सोची रहलों छेलै, “आय देश में जगदीश प्रसाद हेनों एक्के ठो छै की । लाखों में छै । कोय जंगल के सौदा करी रहलों छै, कोय आदमी के बस्ती के, कोय नदी के पहाड़ के, कोय कलकारखाना के, आरो कत्तें तें हेनो छै कि देशे के सौदा करी रहलों छै ।

“दुख तें ई छे कि हेनों जगदीश प्रसाद के चंगुल में आय लाखो लाख लोग फँसी चुकलों छै । आदमी कें पैसा चाहियों, सुख चाहियों । देश के सम्पत्ति, देश चूल्हों-भांड़ी में जाय, हेनों सब आदमी कें कोय मतलब नै । आरो हेने सब आदमी के सहयोग लै के बाहरी देश आय भारत के शांति भंग करै में लागलों होलों छै । कभी हैदराबाद में खून के बोहों, कभी मुम्बई में, कभी दिल्ली में, कभी छत्तीसगढ़ में ।

''है रं भला देश रहें पारें । आय देश रों उत्तरी, पश्चिमी, पूर्वी अशान्त छै । आपने देश के लोग आपने देश कें बाँटै लें चाही रहलों छै । हेनों सब आदमी कें विदेश सें धन मिली रहलों छै । आरो ई देश के बाकी लोग डरों सें गुमसुम बनलों होलों छै । या तें फेनू ओकरा मदद करी रहलों छै, है भूली कें कि हमरों देश कत्तें लहूलुहान होय रहलों छै । आय देश में एक कश्मीर नै, सौ कश्मीर बनी गेलों छै ।

''आखिर देश के जवान कें कहाँ-कहाँ लगैलों जावें सकै छें । देश के सरकार पर एकरा सें कत्तें बोझों बढ़ै छै, ई सब बातों सें आबें लोगों कें जना कोय मतलबे नै रहलै । लागै छै, जना गांधी, सुभाष, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद के कुर्बानिये बेकार चल्लों गेलै । हम्में तें चाहै छियै कि हमरों देश के घर-घर में अब्दुल हमदी आरो सौरभ कालिया हेनों वीर पैदा हुएँ ।

''आरो सबसें बड़ों बात कि देश के ऊ सब चेतौ, जे आपनों चुप्पी सें या मदद सें सौंसे देश कें कश्मीर बनाय पर तुललों छै । हिन्दुस्तान में बेटा हुएँ तें हमीद और कालिया रं, बेटी हुए तें झाँसी के रानी आरो कश्मीर के रुखसाना रं । देश तें आपने समृद्ध होय जैतै, खाली एकेक भारतवासी ई तें कसम खाय लौ कि हम्में नै तें समाज विरोधी काम करवै, नै तें हेनों काम में आपनों भाइयो कें मदद करवै । खूने छेकै तें की । देश के दुश्मन तें आपनों खूनो के दुमन छेकै ।

''दुर्भाग्य छै कि आय देश के कोना-कोना में, गली, मुहल्ला में, शहर-गाँव में जगदीश प्रसाद हेने आदमी के जुटान हुएँ लागलों छै । यै में राज नेताओ कम जिम्मेदार नै छै । आपनों लाभ वास्तें देश में साम्प्रदायिक, जातिवाद फैलावै छै आरो फेनू भाषणो में एकरों विरुद्धो बोलै छै । ई सब नेता छेकै, जगदीश प्रसाद छेकै, चेहरा पर नकाब डाललें ।

''टीवी पर नंगापन, अखबार में, नंगापन, दिमाग में नंगापन, भला आवै वाला पीढ़ी के, की रं के मोॅन-मिजाज होतै, सोचें पारों ।

चरित्र-निर्माण सें नै तें किताब के मतलब रही गेलों, नै तें गुरु जी सिनी कें । जड़े खतम छै, फूल-फोंर की फरतै ।

''लेकिन हम्में निराश नै हुएँ पारौं । हमरों मनों में आभियो ऊ लिखलों पंक्ति सिनी अमिट छै कि भारत जमीन रों टुकड़ा नै, एक जीत्तों राष्ट्रपुरुष छेकै । हिमालय एकरों माथा छेकै, गोरीशंकर चोटी छेकै, कश्मीर किरीट रं छेकै, पंजाब आरो बंगाल दू विशाल कंधा छेकै, उत्तर प्रदेश, बिहार एकरों छाती छेकै । विन्ध्याचल कमर छेकै, नर्मदा करधनी, पूर्वी आरो पश्चिमी घाट दू विशाल जांघ छेकै, कन्याकुमारी एकरो चरण छेकै, समुन्दर एकरों गोड़ धोय छै, वर्षा के कारों-कारों मेघ एकरों घुंघरैलों बाल छेकै, चान सुरुज एकरों आरती उतारै छै, शीतल सुगंधित हवां यै पर चंवर डुलावै छै । ई वन्दन रों भूमि छेकै । अभिनंदन रों भूमि छेकै, ई तर्पण रों भूमि छेकै, समर्पण रों भूमि छेकै, एकरों कंकड़-कंकड़ शिव छेकै । एकरों बूंद-बूंद गंगाजल । हम्में जीवै तें एकरे लें, मरवै तें एकरे लें ।

''की सोचवो करी रहलों छौ ?'' दानिश नें फैसल कें एत्तें मौन देखी कें टोकलकै ।

दानिश के बात सुनी फैसल जना चैत में आवी गेलों रहें, मतरकि सहज नै हुएँ पारलै । बस वैं एतनै टा कहलकै, ''जे सोची रहलों छेलियै, ऊ ई देश के हर आदमी में सोचना चाही ।''

जीप अभियो वहें तेजी सें जंगल के बीच सें निकली रहलों छेलै । घर तांय पहुँचै में बस आरो कुछ देर बाकी रहलों छै ।

■■■